# स्तालिन के खिलाफ सीपीएसयू द्वारा उठाये कदमों के प्रसंग में

शिवदास घोष

# स्तालिन के खिलाफ सीपीएसयू द्वारा उठाये कदमों के प्रसंग में

## कॉमरेड ख्रुश्चेव और विदेशों के अन्य कॉमरेड्स को खुला पत्र

**ख्रुश्चेव द्वारा सोवियत पार्टी के नेतृत्व और राजसत्ता को हथिया लिये जाने और व्यक्ति-पूजा के नाम पर स्तालिन को बदनाम किये जाने के बाद कॉमरेड स्तालिन का मूल्यांकन।**

प्रति,
कॉमरेड ख्रुश्चेव* व विदेशों के अन्य कॉमरेड्स,

प्रिय कॉमरेड्स,

कॉमरेड ख्रुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) की 20वीं कांग्रेस में एक फैसला यह हुआ था कि वे स्तालिन की भूमिका का मूल्यांकन करेंगे। 20वीं कांग्रेस के इस फैसले से पहले तक दुनिया के लगभग सभी कम्युनिस्ट स्तालिन को गलतियों से परे, आलोचना से परे मानते थे। स्तालिन के मूल्यांकन के बारे में 20वीं कांग्रेस में आलोचना की जो शुरुआत हुई थी, 22वीं कांग्रेस के फैसले उसी की परिणति के रूप में आये हैं। उसके बाद से सोवियत नेतृत्व जो विभिन्न कदम उठाता आया है, उनमें हम 22वीं कांग्रेस में लिये गये फैसलों का ही प्रतिफलन देख रहे हैं, जिनका कमोबेश उद्देश्य एक ही है और वह है, जनमानस से स्तालिन को मिटा डालना। इसी उद्देश्य से उनकी रचनाओं का प्रकाशन निषिद्ध किया हुआ है; उनकी रचनाओं से कोई उद्धरण देना जानबूझकर छोड़ा हुआ है; उनकी याद से जुड़े और नामकरण किये शहरों, गांवों, पार्कों, सड़कों, सामूहिक फार्मों एवं और भी बहुत से प्रतिष्ठानों का नाम बदलकर नया नामकरण किया जा रहा

* जो बाद में वर्गद्रोही हो गये।

है, उनकी तस्वीरें हटायी जा रही हैं और बुत गिराये जा रहे हैं, लेनिन-स्तालिन समाधि से उनकी संरक्षित मृत देह हटा दी गयी है और समाधि का नया नामकरण कर दिया गया है–लेनिन समाधि। सीपीएसयू के वर्तमान नेतृत्व की राय के अनुसार उसके द्वारा उठाये गये उपरोक्त कदम व इसी तरह के अन्य कदम उन सब कम्युनिस्ट-विरोधी रुझानों व चलनों की घोर निन्दा करने और अंततः उनका उन्मूलन कर डालने के लिए ही लक्षित हैं, जिनको प्रश्रय देने का आरोप स्तालिन पर है। उनके अनुसार आम तौर पर व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन-पूजा के जरिये ही मुख्यतः ये कम्युनिस्ट-विरोधी रुझान प्रतिफलित हुए हैं। स्तालिन पर अन्य जो आरोप लगाये गये हैं, उनमें ये हैं: पार्टी के अंदरूनी जनवाद का उल्लंघन करना, स्तालिन के शासनकाल में पार्टी जीवन व प्रशासन में अफसरशाही को जन्म देना और इसको संस्थापित करना तथा अंतिम यह कि सत्ता का दुरुपयोग करना, जिसके फलस्वरूप कई निर्दोष लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है।

## साम्यवादी दुनिया में मतभेद

खुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी ने स्तालिन का जो विशेष मूल्यांकन किया है और व्यक्तिपूजा के खिलाफ संघर्ष में जिस तरह के उपरोक्त कदम उन्होंने उठाये हैं, उनको लेकर विश्व की विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों में भारी मतभेद हैं–इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। तरह-तरह से, नाना बातों से ये मतभेद इस बीच खुद को उजागर करते आ रहे हैं। बहुत-सी कम्युनिस्ट पार्टियां खुश्चेव की इस लाइन का अनुसरण करके अपने-अपने देश में स्तालिन को बिल्कुल मिटा डालने के लिए या फिर कम से कम उन्हें एक साधारण कम्युनिस्ट के स्तर पर उतार लाने के लिए सक्रिय हो उठी हैं। ये सब घटनाएं स्तालिन के शासनकाल में प्रचलित उसी पुरानी यांत्रिक प्रैक्टिस की याद दिला देती हैं, जब हम देखते थे कि यही पार्टियां सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी जो कुछ बोलती या करती थी उन सभी मामलों में यांत्रिक ढंग से उसकी हां में हां मिलाती थीं। दूसरी तरफ, कुछ

कम्युनिस्ट पार्टियों ने स्तालिन के प्रति अंधभक्ति की वजह से एक उल्टी झोंक में एकदम कट्टर ख्रुश्चेव विरोधी भूमिका निभायी है। उनमें जो बड़े ही उग्र हैं, वे खफा होकर इस हद तक चले गये हैं कि स्तालिन के प्रसंग में ख्रुश्चेव जो कुछ भी कह रहे हैं या कर रहे हैं, उन सब की निन्दा करके एकदम ख्रुश्चेव का पुतला जलाने पर ही उतर आये हैं। जबकि और एक धड़ा है, जो आम तौर पर ख्रुश्चेव की लाइन से मोटे तौर पर सहमत होते हुए भी अतीत के साथ बदली हुई वर्तमान स्थिति का सामंजस्य बैठाना अपने लिए बड़ा कष्टकर पा रहा है। वैचारिक क्षेत्र में जबरदस्त भ्रांति के चलते वे मांग उठा रहे हैं कि जो नेतृत्व विश्व साम्यवादी आन्दोलन का संचालन करेगा, उसका मूल केन्द्र आइन्दा एक देश में नहीं रहना चाहिए, नेतृत्व देने के लिए एक से ज्यादा केन्द्र रहने चाहिए। ये सब लक्षण व कथन इस निर्विरोध तथ्य की गवाही देते हैं कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन आज ऐसे एक गहरे वैचारिक संकट के सामने है कि विश्व शांति खेमे और विशाल समाजवादी खेमे में शामिल देशों में सोवियत रूस सहित दूसरे कई एक समाजवादी देशों के साथ अल्बानिया के राजनयिक संबंध तक टूट गये हैं। हमें आशंका है कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन के सामने जो बहुत बड़ी वैचारिक भ्रांति आज दिखाई दे रही है, उसका अगर समय रहते सही समाधान नहीं किया गया, तो इससे विश्व साम्यवादी आन्दोलन के इतिहास में एक नयी परिघटना घट सकती है, जब दुनिया के लोग देखेंगे कि विभिन्न देशों के कम्युनिस्टों के बीच एकता और संहति को और भी सुदृढ़ करने और विश्व साम्यवादी समाज कायम करने की ओर तेजी से डग भरने की बजाय वे (समाजवादी) देश उल्टे एक दूसरे के खिलाफ खुले संघर्ष में लिप्त हो गये हैं; विश्व साम्यवादी समाज कायम करने के लक्ष्य पर पहुंचने और इस महान आदर्श को सफलता के साथ साकार करने के पथ पर बेरोकटोक आगे कूच करने में खुद ही रुकावट पैदा कर बैठे हैं। हाल ही में अल्बानिया के साथ अन्य कई एक समाजवादी देशों का जो राजनयिक संबंध टूटा है और इसके फलस्वरूप और भी जो सब अवांछित घटनाएं घटी हैं, उनके परिप्रेक्ष्य

में हमारी इस आशंका को यूं कह सकते हैं कि बातों में नहीं उड़ाया जा सकता, बल्कि ये घटनाएं इस बात की सूचक हैं कि हमारी आशंका वास्तव में किसी दिन सच साबित होती दिखाई दे सकती है। इन परिस्थितियों में मामले की गंभीरता तनिक भी नजरअंदाज नहीं की जा सकती है।

## खुले वैचारिक संघर्ष की जरूरत

हमारा सुविचारित मत यह है कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने स्तालिन का जो विशेष मूल्यांकन किया है और स्तालिन के बारे में जो सब कदम उठाये हैं, उस मामले में विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों में वास्तव में मतभेद हैं। इस बात से इनकार करने से तो विश्व साम्यवादी आन्दोलन का ही निश्चित रूप से नुकसान करना हो जायेगा। शुतुरमुर्ग की तरह आंख मूंदकर इसे नकार देना आत्म-प्रवंचना के ही बराबर हो जायेगा, जिसके फलस्वरूप परिस्थिति और भी खराब हो जायेगी। हमारा मानना है कि इस विषय से संबंधित सभी सवालों पर व्यापक तौर पर बारीकी से विचार करना चाहिए और विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों और विशाल जनता को शामिल करके खुली बहस के जरिये ही यह विचार होना चाहिए, क्योंकि केवल ऐसे खुले बहस-मुबाहिसों के जरिये ही विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों में जो मतभेद हैं, उनको खुले में सामने लाकर उनका सही समाधान किया जा सकता है। मजदूर वर्ग और जनता को शिक्षित व सचेत करने का यही लेनिन द्वारा निर्देशित रास्ता है और मजदूर वर्ग व जनता से सीख लेने का रास्ता भी यही है। सैद्धांतिक मामलों में किसी मतभेद को ढकने की कोई कोशिश नहीं की जानी चाहिए, मतभेदों से कतराने के जरिये के तौर पर कोई वाया मीडिया यानी बीचोंबीच का या जोड़तोड़ का रास्ता नहीं निकालना चाहिए। केवल मात्र अडिग संघर्ष के रास्ते से ही वैचारिक क्षेत्र में व्याप्त इस भ्रांति के कुहासे को चीर देना और साम्यवादी आन्दोलन को फिर सही लीक पर लाना व उसको और भी मजबूत करना संभव है। इसलिए इस विषय में जिसमें सिद्धांत सन्निहित हैं, गुपचुप ढंग से फैसला लेने की नीति

को प्रश्रय देना कतई नहीं चल सकता। यह बात सच है कि कुछ कॉमरेड यह आशंका जता रहे हैं कि ख्रुश्चेव के नेतृत्व में सीपीएसयू ने स्तालिन के बारे में जो फैसले लिये हैं और उनको केन्द्र करके साम्यवादी दुनिया में जो तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं हुई हैं, उन सब को खुले वैचारिक संघर्ष में लाने की जो पद्धति उन्होंने ली है, उसमें विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों की एकता ही कमजोर हो जायेगी, जिसके परिणामस्वरूप भविष्य में हो सकता है कि यह खुली दरार पैदा कर दे। लेकिन हमारा मानना है कि साम्यवादी एकता के बारे में अत्यंत सतही धारणा के कारण ही यह आशंका दिखाई दी है। स्तालिन के बारे में ख्रुश्चेव के फैसले और उनको केन्द्र करके दुनियाभर के कम्युनिस्टों की जो तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं हुई हैं, उनको लेकर खुला वैचारिक संघर्ष चलाने से अर्थात आलोचना-आत्मालोचना के लेनिनवादी सिद्धांत को वास्तव में प्रयोग करने से कम्युनिस्ट एकता ताश के पत्तों के महल की तरह ढह जायेगी—ऐसी धारणा ठीक नहीं है, क्योंकि कम्युनिस्ट एकता इतनी क्षणभंगुर नहीं होती है। सचमुच में ही अगर यह इतनी क्षणभंगुर है, तो और चाहे जो कुछ भी हो पर यह कम्युनिस्ट एकता कतई नहीं है। तब इसकी जगह विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों में एकता की प्रकृति और खूबी की सही समझ के आधार पर असली एकता जितनी जल्दी कायम कर दी जाये, बेहतर है। लेनिन का समूचा जीवन हमें यही सीख देता है कि वैचारिक सवाल पर जो समझौताहीन संघर्ष उन्होंने चलाये थे और जो खुले, बेबाक, उन्मुक्त वाद-विवादात्मक बहस-मुबाहिसे उन्होंने किये थे, उन सबने विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता को कमजोर करना व स्थायी फूट डालना तो दूर की बात रही, उल्टे इस एकता को हमेशा और भी मजबूत व सुदृढ़ करने में ही मदद की थी।

आज विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच आपसी संबंधों के क्षेत्र में सही समझ का जो अभाव देखा जा रहा है, उसका कारण खोजने पर देखेंगे कि लेनिनोत्तर काल में सभी विवादास्पद मामलों को विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों की बंद कमरों की मीटिंगों के दायरे में ही अटकाये रखने और गुपचुप रखने की जिस पद्धति का

अनुसरण किया गया है, वह इसके लिए कोई कम जिम्मेदार नहीं है। इसलिए कम्युनिस्ट एकता की सही समझ को विकसित करने के लिए इस पुरानी नीति और प्रैक्टिस को तुरंत छोड़ देने की जरूरत है।

## यह खुली चिट्ठी क्यों

खुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी ने जिस तरह स्तालिन का मूल्यांकन किया है, आम तौर पर व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन-पूजा से लड़ने के लिए जो सब कदम उठाये हैं और उनको केन्द्र करके विश्व साम्यवादी आन्दोलन के सामने जो बड़ा भारी वैचारिक संकट दिखाई दिया है, उसके बारे में विश्व साम्यवादी आन्दोलन का अभिन्न अंग होने के नाते हमारी पार्टी एसयूसीआई मूक दर्शक बनी नहीं रह सकती। इस संबंध में उपरोक्त वर्णित दो विपरीत विचारों में से एक का समर्थन और दूसरे का विरोध करना हमारी पार्टी सही नहीं मानती है। औपचारिक, जड़सूत्रवादी और यांत्रिक दृष्टिकोण लेकर समस्या को देखने से यह समस्या हल नहीं हो सकती; इसलिए बारीकी से विश्लेषण करने की अनिवार्य तौर पर जरूरत है। इस जरूरी प्रयोजन को मद्देनजर रखकर और विश्व साम्यवादी आन्दोलन आज जिस गंभीर वैचारिक संकट के रूबरू है, उसके समाधान के लिए संघर्ष में अपनी सामर्थ्यभर भूमिका निभाने की क्रांतिकारी प्रेरणा से उद्बोधित होकर आम तौर पर बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों और खास तौर पर खुश्चेव के सामने इस मामले में अपना वक्तव्य पेश करना हम अपना एक जरूरी फर्ज समझते हैं। इसीलिए यह खुली चिट्ठी है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि सभी कॉमरेड्स इस पर यथोचित महत्व देकर विचार करेंगे।

## किसी तरह का पूर्वाग्रह रखना ठीक नहीं

मूल आलोच्य विषय में जाने से पहले हमारा यह हार्दिक निवेदन है कि अंध खुश्चेव-विरोधी या अंध स्तालिन-विरोधी मन लेकर इस मसले को न देखें। यह बात कहने में लेशमात्र भी संदेह

नहीं है कि स्तालिन के समय जो हुआ है, उसका सटीक मूल्यांकन करना ही चाहिए। लेकिन यह स्तालिन को खामख्वाह बड़ा करके दिखाने या उन्हें कलंकित करने के लिए नहीं, बल्कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन को इसकी कमियों-खामियों और सीमाबद्धताओं से मुक्त करने और इसे शक्तिशाली बनाने के लिए ही किया जाना चाहिए; आम तौर पर जिस व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन-पूजा ने विश्व साम्यवादी आन्दोलन को वर्तमान वैचारिक भ्रांति व संकट में ला छोड़ा है, उस व्यक्तिपूजा के बेहूदा विचार और व्यवहार को जिस मूल कारण ने पनपाया और संपोषित किया, उसे हम कम्युनिस्ट कैसे निर्मूल कर सकते हैं, इस कठिन काम से हमारा गहरा सरोकार होना चाहिए। इसलिए इस समस्या के प्रति सही नजरिया यह होना चाहिए कि व्यक्ति-स्तालिन के खिलाफ लड़ने के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन से व्यक्तिपूजा के कारण को ही निर्मूल कर देने के दृढ़ संकल्पित लक्ष्य से इस समस्या पर विचार हो।

## व्यक्तिपूजा की उत्पत्ति और विकास के बारे में तथाकथित व्याख्याएं

सर्वविदित है कि व्यक्तिपूजा सामूहिक नेतृत्व संबंधी मार्क्सवादी-लेनिनवादी धारणा के बिल्कुल विरोधी है। लेकिन यह बात भी माननी पड़ेगी कि स्तालिन के जीवन के अंतिम दौर में व्यक्तिपूजा, जो कि गैर-मार्क्सवादी धारणा है, पैदा हो गयी थी और पार्टी जीवन पर पूरी तरह छा गयी थी। इससे विश्व साम्यवादी आन्दोलन की अपार क्षति हुई है, यह बात भी उतनी ही सच है। जहां तक इन सब बिन्दुओं की बात है, इन पर ख्रुश्चेव व सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के अन्य नेताओं से हमारी कोई असहमति नहीं है; लेकिन हम साथ ही साथ यह बात भी कहे बिना नहीं रह सकते कि इस व्यक्तिपूजा के मूल कारण को ज्ञात करने और साम्यवादी आन्दोलन पर इसके घातक असर की थाह लेने का कोई गंभीर प्रयास किसी की भी तरफ से अभी तक नहीं किया गया है। हम इस विषय में अभी तक तीन तरह की व्याख्याएं पाते हैं, जो हमारी राय में भ्रांतिपूर्ण

हैं। आइए, इनकी जांच-परख करके देखें। किस बात से इस व्यक्तिपूजा की उत्पत्ति हुई है, इसका विश्लेषण करने में कुछ कॉमरेड्स मानते हैं कि इस व्यक्तिपूजा की उत्पत्ति और विकास के लिए स्तालिन के चरित्र के नकारात्मक पहलू ही पूरी तरह से जिम्मेदार हैं। इस तरह का विश्लेषण एकदम अवैज्ञानिक है, क्योंकि इतिहास में व्यक्ति की जो भूमिका है, यह विश्लेषण उस पर अत्यधिक मात्रा में जोर देता है और व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं व गुणों को वस्तुगत परिस्थितियों व वस्तुपरक प्रक्रियाओं से पूर्णतः स्वतंत्र मानता है। इसके अलावा, सभी व्यक्तियों में अवगुण भी होते ही हैं, किसी में कम किसी में ज्यादा–इनकी मात्रा में फर्क हो सकता है, लेकिन अवगुण या चरित्र के नकारात्मक पहलू तो होते ही हैं। फिर किसी व्यक्ति में कोई अवगुण होने से ही सभी मामलों में वह दोषों की ओर ले जाता है–बात ऐसी भी नहीं है। केवल अनुकूल परिवेश मिलने से ही किसी व्यक्ति के अवगुण उसके चरित्र की प्रधान विशेषता बन सकते हैं। सीपीएसयू जैसी एक कम्युनिस्ट पार्टी में व्यक्तिपूजा के पनपने और उत्तरोत्तर बढ़ते जाने के पूरक अनुकूल परिवेश यदि नहीं होता, तो बहुत बड़े व्यक्तित्व के अधिकारी होने के बावजूद स्तालिन खुद को व्यक्तिपूजा की ओर प्रवृत्त करने और दूसरों को इस चलन में शामिल करने में पूर्णतः नाकाम रहे होते। जिस परिवेश में स्तालिन के 'नकारात्मक पहलू' उनके चरित्र की प्रधान विशेषता बनकर उभर पाये, उसका पता लगाना है तो हमें जांच-परख कर यह देखना होगा कि सीपीएसयू की नेतृत्वकारी पार्टी बॉडियों में उनके सहयोगी कॉमरेडों की भूमिका क्या रही। यह देखना होगा कि सीपीएसयू के साथ संबंधों के क्षेत्र में दूसरे देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के नेताओं की क्या भूमिका रही। साथ ही साथ यह भी देखना होगा कि व्यक्ति स्तालिन की भूमिका क्या रही। इसके अलावा स्तालिन के चरित्र के जिन पहलुओं को सीपीएसयू के वर्तमान नेतृत्व द्वारा उनके चरित्र के नकारात्मक पहलू के रूप में चिह्नित किया जा रहा है, उन्हें ऐसा ही मान लेने से पहले बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यबोधों की धारणा से बिल्कुल अलग धारणा वाले कम्युनिस्ट नैतिक मूल्यबोधों की सही समझ के आधार पर इनकी विज्ञान-सम्मत ढंग से जांच-परख कर लेनी होगी।

लेकिन दु:ख की बात है कि सीपीएसयू के वर्तमान नेतृत्व में से किसी ने भी इस पहलू पर कोई रोशनी नहीं डाली है। फिर ऐसे भी कुछ कॉमरेड्स हैं, जो स्तालिन का या जो कुछ स्तालिन ने किया है, उसका समर्थन करने के अत्युत्साह में भरकर यह दलील दे रहे हैं कि अंदरूनी खतरे और विदेशी आक्रमण से विश्व के इस पहले समाजवादी राष्ट्र को बचाने के लिए जिन खास परिस्थितियों में स्तालिन को काम करना पड़ा, वे ऐसी थीं कि उन परिस्थितियों में व्यक्तिपूजा और इससे संबंधित अन्य सहवर्ती बुराइयों से बचने का और कोई उपाय नहीं था, लेकिन कोई भी सचेत मार्क्सवादी इस दलील को मान नहीं सकता। यह मार्क्सवाद नहीं है, यह है आर्थिक निश्चयतावाद की गलत धारणा के गर्भ से पैदा हुआ एक तरह का भोंडा भौतिकवाद, जिसको युग-युग में मार्क्सवाद से गद्दारी करने वाले लोगों ने मार्क्सवाद के नाम पर चलाना चाहा है। उन्हीं परिस्थितियों में एक पार्टी ठीक रास्ते पर भी चल सकती है या गलती भी कर सकती है। पार्टी की इस तरह की भूल-भ्रांति के कारणों की व्याख्या करते हुए यह कह देना कि ये सब महज एक खास समय की वस्तुगत परिस्थितियों की देन हैं–आदर्शगत और चेतनागत भूमिका (subjective role) को ही नकारना हो जायेगा; इसका मायने हो जायेगा पुछल्लावाद यानी वस्तुगत परिस्थितियों के पीछे-पीछे चलना; आर्थिक निश्चयतावाद की ओर प्रवृत्त हो जाना और ऐसी गलत धारणा की दलदल में धंस जाना कि सब कुछ नियति की तरह अवश्यंभावी है। फिर ऐसे भी कुछ कॉमरेड्स हैं, जो देश की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को ही व्यक्तिपूजा के पैदा होने का कारण मानते हैं। इनको भी दो भागों में बांटा जा सकता है। इनमें एक हिस्सा ऐसा है कि ठीक है वे कम्युनिस्ट तो हैं, लेकिन अपनी चेतना के निम्न स्तर की वजह से वस्तुगत परिस्थिति पर जरूरत से ज्यादा जोर दे रहे हैं, जिसके फलस्वरूप चिंतनगत और आदर्शगत भूमिका को छोटा करके देख रहे हैं; अर्थात अनजाने में वे उसी आर्थिक निश्चयतावाद की जुगाली कर रहे हैं जो साम्यवादी आन्दोलन के लिए नुकसानदेह है। दूसरा हिस्सा वह है, जिसमें सामाजिक जनवादी आते हैं, जो समाजवाद को हेय कर देने के घृणित उद्देश्य से इस तरह की घटना को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करके

खास तौर से सोवियत संघ और दूसरे-दूसरे समाजवादी देशों के खिलाफ और आम तौर से कम्युनिज्म के खिलाफ कुत्सापूर्ण प्रचार कर रहे हैं। इसीलिए कॉमरेड्स, ये जो तीन तरह के विचार-विश्लेषण हैं, इनमें से कोई भी विचार-विश्लेषण व्यक्तिपूजा के पनपने और इसके बढ़ते जाने के मूल कारण की व्याख्या सही रूप से पेश नहीं कर पाता। जबकि सच्चाई यह है कि जब तक मूल कारण को सही रूप से खोज नहीं निकाला जाता और दृढ़ निश्चय के साथ उसके खिलाफ संघर्ष करके उसे दूर नहीं किया जाता, तब तक व्यक्तिपूजा का भी उन्मूलन नहीं किया जा सकता। तो सवाल यह है कि व्यक्तिपूजा के पनपने का मूल कारण क्या है?

## व्यक्तिपूजा के पनपने का मूल कारण

हम शुरू से ही देख रहे हैं कि स्तालिन काल में साम्यवादी आन्दोलन की विराट प्रगति और सफलता के बावजूद यह कुल मिलाकर कई गंभीर कमियों-खामियों और कमजोरियों-सीमाबद्धताओं से ग्रसित था, जिसके फलस्वरूप इसे काफी नुकसान भी पहुंचा है। हमारा मानना है कि व्यक्तिपूजा के पनपने और बढ़ने का मूल कारण वैचारिक क्षेत्र में इन कमियों-खामियों और सीमाबद्धताओं-त्रुटियों के पहलुओं में ही निहित है। इन त्रुटियों-कमियों के पहलू कौन से हैं? **हमारा सुविचारित मत है कि स्तालिन के नेतृत्व के समय ऑथोरिटी बोध की मार्क्सवादी-लेनिनवादी समझ को गुरुवाद के साथ गड्डमड्ड कर दिया गया था। इसी भ्रांति ने वैचारिक क्षेत्र में व्यक्तिपूजा के बीज बोये हैं।** मार्क्सवाद-लेनिनवाद में भी ऑथोरिटी की भावना काम करती है—इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन मार्क्सवाद-लेनिनवाद सम्मत इस ऑथोरिटी की भावना के साथ गुरुवाद का तनिक भी सादृश्य नहीं है; गुरुवाद का आधार है नेतृत्व के साथ संघर्षरहित अंधभक्ति; गुरुवाद मानता है कि ऑथोरिटी से कभी गलती नहीं हो सकती, ऑथोरिटी सकल आलोचनाओं से परे है और अंततः यह ऑथोरिटी को देवता तुल्य बना डालता है। ऐसे अंध ऑथोरिटी बोध का ऑथोरिटी बोध की द्वन्द्वात्मक वस्तुवादी समझ से कतई मेल नहीं है। ऑथोरिटी के बारे में द्वन्द्वात्मक वस्तुवादी भावना-धारणा नेतृत्व

के साथ द्वन्द्व–समन्वय की प्रक्रिया को बंद तो करती ही नहीं, वरन इस द्वन्द्व–समन्वय की प्रक्रिया को एक आवश्यक पूर्वशर्त के रूप में मानती है। यह द्वन्द्व विरोधात्मक प्रकृति का द्वन्द्व नहीं होता, बल्कि ऑथोरिटी के साथ इस द्वन्द्व–संघर्ष का उद्देश्य है–ऑथोरिटी के साथ एकता को और भी सुदृढ़ करना और ऑथोरिटी को और भी मजबूत करना। वैचारिक क्षेत्र में इस भ्रम–भ्रांति के कारण ही विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच द्वन्द्वात्मक संबंधों के बजाय औपचारिक संबंध बन गये हैं। इसके फलस्वरूप ही जनवादी तौर पर केन्द्रीभूत विश्व साम्यवादी संगठन पतित होकर यांत्रिक तौर पर केन्द्रीभूत विश्व बॉडी में परिणत होकर रह गया है। फिर हरेक कम्युनिस्ट पार्टी के अंदरूनी पार्टी जीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। पार्टी का सामूहिक नेतृत्व जिस नेता के माध्यम से प्रतिफलित हो रहा है, उसके साथ पार्टी के अन्य सभी सदस्यों के द्वन्द्व–समन्वय की प्रक्रिया पूर्णतः लुप्त हो गयी है। संक्षेप में, पार्टी के अंदरूनी जीवन में वैचारिक संघर्ष की प्रक्रिया कार्यतः बंद हो गयी है। पार्टी बॉडियों–कमेटियों में द्वन्द्व–समन्वय की पद्धति पर आधारित 'तर्क–वितर्क के जरिये फैसले पर पहुंचने' ('Discussion in dialogue') की प्रक्रिया अगर न रहे, तो जनवादी केन्द्रीयता का ह्रास हो जाना लाजिमी है, तब वास्तव में यह औपचारिक जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता हो जाती है। नतीजतन वह निचले स्तर के आम पार्टी–पांतों के सदस्यों–कार्यकर्ताओं से नेतृत्व को काटकर, अलग–थलग करके ऊपर शीर्ष पर अफसरशाही नेतृत्व को निर्मित कर डालती है; चिंतन की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया की जगह यांत्रिक प्रक्रिया ले लेती है; पार्टी के नेताओं के साथ कार्यकर्ताओं के द्वन्द्व–समन्वय के संबंध की बजाय यांत्रिक संबंध कायम हो जाते हैं। तब नेता 'प्राइम मूवर' यानी प्राथमिक प्रेरक की भूमिका निभाने लगते हैं; वे हुक्मनामे जारी करते रहते हैं और कार्यकर्ता उन हुक्मनामों का अंधे की तरह यांत्रिक ढंग से पालन करने लगते हैं। ऐसी अवस्था में पार्टी बॉडी या कमेटी में नेतृत्व के साथ कार्यकर्ताओं की चर्चा–बहस होती भी है तो वह द्वन्द्व–समन्वय की प्रक्रिया में 'तर्क–वितर्क के जरिये फैसले पर पहुंचने' हेतु नहीं की जाती, बल्कि वह केवल मात्र नेताओं के वक्तव्य कार्यकर्ताओं को बताने और समझाने के लिए ही की जाती है। ऐसी

स्थिति में पार्टी में अगर एक प्रखर व्यक्तित्व सम्पन्न नेता रहे, तो उनको केन्द्र करके व्यक्तिपूजा पनप जाने और उसके बढ़ते जाने का पथ प्रशस्त हो जाता है और अगर वैसा प्रखर व्यक्तित्व सम्पन्न नेता न हो, तो पार्टी में गुटबाजी पैदा हो जाती है। बहरहाल, दोनों ही मामलों में ऊपर से नीचे तक हर स्तर पर अफसरशाही पैदा हो जाती है और वह काम करने लगती है। जहां गुट होते हैं, वहां नेतृत्व गुटों के बीच समझौते और तालमेल के जरिये ही काम चलाने लगता है और पार्टी की एकता को बचाये रखने के लिए आम कार्यकर्ताओं से साम्राज्यवाद-विरोधी, जनवादी और समाजवादी आन्दोलनों की मानवीय अपील के द्वारा औपचारिक पार्टी एकता बनाये रखी जाती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस तरह जो नेतृत्व निर्मित होता है और काम करता है, वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी सामूहिक नेतृत्व की धारणा के बिल्कुल विपरीत होता है। **हमारा मत यह है कि स्तालिन सरीखे प्रखर व्यक्तित्व सम्पन्न नेता की मौजूदगी से जुड़े ऑथोरिटी बोध की यांत्रिक समझ ही आम तौर पर व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन-पूजा के पनपने और उसके बढ़ते जाने के लिए जिम्मेदार है।**

## सामूहिक नेतृत्व के मायने महज कमेटी निर्णय नहीं

व्यक्तिपूजा के प्रसंग में काफी कुछ जिम्मेदार कॉमरेडों की चर्चा में ''अंदरूनी पार्टी जनवाद'' और ''सामूहिक नेतृत्व'' आदि शब्दावलियां जिस तरह इस्तेमाल की गयी हैं, उनसे यह प्रदर्शित होता है कि इनके बारे में उनकी समझ में ही कुछ कमी है। अन्दरूनी पार्टी जनवाद और सामूहिक नेतृत्व की धारणा पार्टी संगठन के बारे में लेनिनीय नीति जनवादी केन्द्रीयता की समझ के साथ ओत-प्रोत रूप से जुड़ी हुई है। जनवादी केन्द्रीयता है केन्द्रीयता एवं सर्वहारा जनवाद का सम्मिश्रण। फिर यह बात भी हमेशा याद रखें कि सर्वहारा जनवाद कभी औपचारिक जनवाद नहीं होता है, जो कि बुर्जुआ समाज व्यवस्था का ही एक प्रतिफलन मात्र होता है। सर्वहारा जनवाद तो सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण पर आधारित होता है। इसलिए औपचारिक जनवाद के आधार पर रचित कोई संविधान चाहे जितना भी अच्छा क्यों न

हो, जितने भी उदार प्रावधान उसमें क्यों न हों, उसके आधार पर पार्टी में जनवादी केन्द्रीयता हासिल कर पाना संभव नहीं है। **जो वैचारिक स्तर हासिल कर पाने से ही पार्टी बॉडियों-कमेटियों में 'तर्क-वितर्क के जरिये फैसले पर पहुंचने' की प्रक्रिया को सुनिश्चित किया जा सकता है, पार्टी के नेता और सदस्य उस जरूरी स्तर को हासिल कर पाये हैं कि नहीं और पार्टी सदस्य अपनी सचेत सर्वहारा क्रांतिकारी भूमिका निभा रहे हैं कि नहीं–मुख्यतः इसी पर जनवादी केन्द्रीयता की सफलता निर्भर करती है।** ''महत्वपूर्ण मसलों को लेकर पार्टी बॉडियों में चर्चा-बहस करने और फैसला लेने'' की यह प्रक्रिया सामूहिक नेतृत्व निर्मित करने में चाहे जितनी भी आवश्यक क्यों न हो, पार्टी में अगर गुरुवाद की प्रबल हवा बह रही हो और पार्टी के अंदर मतामत के बीच यथार्थ संघर्ष और अन्त:क्रिया न रहे तो "पार्टी बॉडियों में चर्चा-बहस और फैसला लेना'' पार्टी में सामूहिक नेतृत्व को स्वत: स्थापित नहीं कर देता। बुर्जुआ पार्टियों में भी तो ''महत्वपूर्ण मसलों को लेकर पार्टी बॉडियों में चर्चा-बहस होती है और फैसला होता है''। इसी वजह से बुर्जुआ पार्टियों में भी सामूहिक नेतृत्व काम करता है–यह बात कोई भी समझदार आदमी नहीं कह सकता। मजदूर वर्ग की पार्टी में जनवादी केन्द्रीयता जब औपचारिक जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता की प्रैक्टिस में पतित हो जाती है, तब उसकी स्थिति भी बुर्जुआ पार्टियों से कुछ भिन्न नहीं होती है। ऐसी पार्टियों में अगर ''महत्वपूर्ण मसलों को लेकर चर्चा-बहस की गयी हो और फैसला लिया गया हो'', तो भी वह ज्यादा से ज्यादा कमेटी निर्णय ही हो सकता है, उससे ज्यादा कुछ नहीं। **सामूहिक नेतृत्व का मायने महज कमेटी निर्णय नहीं होता। सामूहिक ज्ञान के रूप में पार्टी के सभी सदस्यों की सामाजिक चेतना ही सामूहिक नेतृत्व होता है।**

## अति जनवाद की भावना काम कर रही है

पूर्व उल्लेखित कुछ जिम्मेदार कॉमरेडों की चर्चा में अक्सर एक बहुत ही गलत रुझान देखा गया है। अतीत की ऑथोरिटियों के प्रति जो अंधभक्ति थी, उसकी जगह अब ठीक उल्टी भावना काम

कर रही है–वह है ऑथोरिटी की भावना को बिल्कुल नकार देने का रुझान अर्थात एक घटना की प्रतिक्रिया के तौर पर ठीक उसके उलट करना–यह महज एक बुर्जुआ तरीका है। यह जो रुझान है, इसे अगर इसी मुहूर्त संघर्ष के जरिये रोका नहीं गया, तो इसके फलस्वरूप उन सब कम्युनिस्टों में अति जनवाद की अराजकतावादी भावना पैदा होने की पूरी संभावना रह जायेगी, जिनकी चेतना का मान निम्न स्तर का है। अति जनवाद की यह अराजकतावादी भावना न केवल बुनियादी तौर पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी है, बल्कि यह मुंह से ऑथोरिटी-विरोधी लफ्फाजी करने की आड़ में पार्टी में नितांत निकृष्ट किस्म की ऑथोरिटी तथा व्यक्ति-अधिनायकत्व कायम करने का छलपूर्ण साधन भी है। पार्टी नेतृत्व का मायने ही है वास्तविक और विशेष नेतृत्व। नेतृत्व के इस वास्तविक और मूल रूप को अस्वीकार करके जो सामान्य किस्म के सामूहिक नेतृत्व की बात करते हैं, वे दरअसल पार्टी को अनुशासनहीन, कई मेल की भीड़ में परिणत कर देना चाहते हैं। **सामूहिक नेतृत्व हमेशा ही मूर्त रूप में नेतृत्व के प्रकटीकरण को समझा जाता है।**

## नेता की नेतृत्वकारी भूमिका को अस्वीकार करने का रुझान

ऑथोरिटी को ही अस्वीकार करने के प्रबल रुझान के चलते कम्युनिस्टों में कोई-कोई तो नेता की नेतृत्वकारी भूमिका को ही अस्वीकार कर बैठा है। सीपीएसयू की 22वीं कांग्रेस की रिपोर्ट में ख्रुश्चेव ने कहा है: ''सोवियत जनता ने पार्टी के नेतृत्व में अपनी कड़ी मेहनत और बहादुराना संघर्ष के जरिये समाजवाद निर्मित करने के क्षेत्र में जबरदस्त सफलता हासिल की है। फासीवाद के खिलाफ पितृभूमि की रक्षा करने के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में वह विजयी हुई है। लेकिन आपको याद होगा कि व्यक्तिपूजा के चलन के उन दिनों में पार्टी और जनता की सारी विजयों, सभी सफलताओं का श्रेय एक आदमी को दे दिया गया था'', अर्थात स्तालिन को। यह बात ठीक है कि नेता को खामख्वाह महिमामण्डित करने को हर कीमत पर निरुत्साहित करना चाहिए, नेता को देवता तुल्य बना

डालने को कम्युनिस्ट आचरण से निर्मूल कर देना चाहिए। लेकिन एक ओर पार्टी के नेता और दूसरी ओर पार्टी व जनता, दोनों को बराबर करके दिखाने पर जिस तरह अतिरिक्त जोर दिया जा रहा है, यह हमारे मतानुसार खतरे से भरा हुआ है। वह खतरा यह है कि यह पार्टी के अपरिपक्व सदस्यों में नेता की नेतृत्वकारी भूमिका को छोटा करके देखने की प्रवृत्ति ला दे सकता हैं। अतीत का पुराना गलत चलन यानी बेमतलब स्तालिन को महिमामण्डित करने या उन्हें देवता तुल्य तक बना डालने का चलन अब कहीं कम्युनिस्टों को दूसरी चरम सीमा पर न धकेल दे। स्तालिन-पूजा के दिनों 'खामख्वाह उनकी जय-जयकार करने' की स्वाभाविक प्रवृत्ति की जगह अब कहीं ऑथोरिटी बोध को ही नकार देने, नेता की नेतृत्वकारी भूमिका को ही न मानने की गलत प्रवृत्ति न ले ले। यह बात याद रखें कि हमारे समाज में व्यक्ति की भूमिका अभी भी नि:शेषित नहीं हुई है। समाज में और पार्टी में भी व्यक्ति आज भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा करता है। एक कम्युनिस्ट पार्टी में सभी सदस्यों की चेतना का मान और समझ समान होती है–ऐसा मान लेना गलत है। जब तक पार्टी के सदस्यों में यह स्तर-भेद रहेगा, तब तक समष्टि के नेता और समष्टि के शेष हिस्से यानी कार्यकर्ताओं का यह फर्क ही नेता की नेतृत्वकारी भूमिका का आधार बना रहेगा। पार्टी के अन्य सभी सदस्यों के साथ नेता का यह खास फर्क भूल जाना आत्म-प्रवंचना के तुल्य है। इसका मायने यह है कि नेतृत्व का जो उच्च स्तर है, आम कार्यकर्ताओं को उस स्तर तक उन्नत करने का जो विराट और बड़ा कठिन काम है, उस काम की उत्कृष्टता की ओर से आंख मूंद लेना, इस काम को करने की जिम्मेदारी निभाने से जी चुरा लेना। इसका मायने है अति जनवाद के अराजकतावादी विचार की वकालत करना, पार्टी में नेता के तौर पर अपनी जगह सुनिश्चित करने का एक धूर्त कौशल मात्र। इसके अलावा पार्टी महज इसके सदस्यों का जमावड़ा नहीं होती है, यह महज पार्टी संगठनों की समष्टि भी नहीं होती है। साथ ही साथ पार्टी अपने इन सभी संगठनों का एक एकीभूत संगठन, एक अनन्य जीवदेह (organic whole) में इन सभी संगठनों का एकीकरण समझी

जाती है। एक मानव देह में स्नायु केन्द्र का जो दर्जा होता है, पार्टी में नेता का भी ठीक वही दर्जा होता है। इसलिए नेता की नेतृत्वकारी भूमिका को मानने से इनकार करने का मायने है मानव देह के स्नायु केन्द्र और बाकी अंगों को एक समान मान लेना। जाहिर है कि सबसे निचली पार्टी इकाई अर्थात पार्टी के तीन सदस्यों को लेकर जो सेल है, वहां भी सभी सदस्यों का दर्जा एक जैसा नहीं होता है। वह सेल एकमात्र तभी एक पार्टी बॉडी बनता है, जब सेल के तीनों सदस्यों में से कोई एक नेता बन जाता है और शेष दो सदस्य उसके नेतृत्व में काम करते हैं। सेल के सदस्यों का जो सामूहिक ज्ञान है, वह सामाजिक चेतना के रूप में सेल के नेता की मार्फत प्रकट होता है। नेतृत्व का यह जो मूर्त रूप है, यह न प्रकट होने से कोई भी बॉडी यथार्थ पार्टी बॉडी में परिणत नहीं हो सकती। पार्टी संगठन का यह सिद्धांत पार्टी की सबसे निचली इकाई सेल से लेकर पार्टी की सर्वोच्च इकाई केन्द्रीय कमेटी तक सर्वत्र ही काम करता है। नेता की नेतृत्वकारी भूमिका को मानने से इनकार करने और ऑथोरिटी की भावना जो गुरुवाद से बिल्कुल भिन्न है, उसको ही तिलांजलि दे देने की कोशिश करने का मायने है सांगठनिक पहलू से कम्युनिस्ट पार्टी को सामाजिक जनवादी (social democratic) पार्टी के स्तर तक गिरा देना, जो सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी लड़ाई चलाने और सत्ता पर कब्जा करने की लड़ाई में जुझारू जनता को नेतृत्व देने के काबिल नहीं रहती है।

## मूल्यांकन या गुण-दोष विवेचन की पद्धति

इस प्रसंग में एक और बात का भी खुलासा करने की जरूरत है। पार्टी और जनता की उपलब्धियों और विजयों का श्रेय स्तालिन को देने का मायने क्या रूसी कम्युनिस्ट पार्टी, लाल फौज और जनता की भूमिका को अस्वीकार करना या पार्टी व जनता के श्रेय को स्तालिन द्वारा हड़पना है, जो ख्रुश्चेव के पूर्व उद्धृत शब्दों में अन्तर्निहित कटाक्ष का अर्थ निकलता है? कम्युनिस्टों के लिए इसका मायने यह नहीं होता है, क्योंकि जब पार्टी, वर्ग और जनता क्रियाशील होती है, तभी नेता की नेतृत्वकारी भूमिका काम करती है। इसलिए

दोनों की भूमिका को समतुल्य करके दिखाना ठीक नहीं है। दुनिया का पहला समाजवादी राष्ट्र लेनिन ने कायम किया था। यह बात जब कही जाती है, तो इसका मायने क्या यह है कि लेनिन ने अकेले ही यह काम किया था? पार्टी व जनता की इन उपलब्धियों और विजयों का श्रेय लेनिन को जाता है–इस बात का मायने क्या बोल्शेविक पार्टी की वीरतापूर्ण भूमिका को अस्वीकारना है? इसका मायने क्या लेनिन द्वारा पार्टी व जनता के श्रेय को हड़पना है? एक कम्युनिस्ट के लिए इसका ऐसा कोई भी मायने नहीं है। यह तो बोल्शेविक पार्टी के नेता के तौर पर, अक्तूबर क्रांति के शिल्पी के नाते लेनिन की नेतृत्वकारी भूमिका को मान्यता देने की ही एक सरल अभिव्यक्ति है। यह तो एक उच्चस्तर के कॉमरेड के गुणों को यथोचित मूल्य देने का ढंग है, जिसके बिना एक कम्युनिस्ट कभी भी खुद के सैद्धांतिक स्तर को ऊंचा नहीं उठा सकता और मुक्ति-संघर्ष में नेतृत्व भी नहीं दे सकता। समाजवादी निर्माण के रास्ते में जो महान प्रगति, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में जो विजय सीपीएसयू, लाल फौज और सोवियत जनता द्वारा हासिल की गयी, उसका श्रेय स्तालिन को दिये जाने को इसी रोशनी में समझना होगा।

## व्यक्तिपूजा उन्मूलन करने का सही उपाय

इसलिए नेता की तारीफ करने या नेता की कितनी ज्यादा तारीफ की गयी है, उसमें व्यक्तिपूजा पनपने का खतरा निहित नहीं है। ऑथोरिटी की भावना भी व्यक्तिपूजा के लिए जिम्मेदार नहीं है। **वास्तव में ऑथोरिटी के प्रति अंधभक्ति अर्थात गुरुवाद तथा समष्टि के नेता के साथ समष्टि के शेष हिस्से और समग्र तौर पर नेतृत्व के साथ पार्टी कार्यकर्ताओं के द्वन्द्वात्मक संबंध की नामौजूदगी, औपचारिक जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता के चलन से जनवादी केन्द्रीयता का ह्रास ही व्यक्तिपूजा के पनपने और इसके बढ़ते जाने का अनुकूल परिवेश पैदा करते हैं।** अगर ऑथोरिटी के प्रति अंधभक्ति रहे, अगर पार्टी बॉडियों में नेताओं और शेष सदस्यों के बीच द्वन्द्वात्मक

संबंध की गैरमौजूदगी साफ जाहिर हो, अगर जनवादी केन्द्रीयता की जगह औपचारिक जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता का चलन जारी रहे तो ''अहम मसलों को लेकर पार्टी बॉडियों में चर्चा-बहस करने और फैसले लेने'' के बावजूद व्यक्तिपूजा को पनपाने वाली परिस्थितियां बरकरार रह ही जायेंगी और ये परिस्थितियां बरकरार रहने से यह हानिकर व्यक्तिपूजा भी निश्चय ही बरकरार रहेगी। यह हो सकता है कि वह ठीक पहले वाले रूप में भले ही न रहे, लेकिन किसी न किसी रूप में वह अवश्य ही रह जायेगी। यह बात भी समझनी होगी कि व्यक्तिपूजा की समस्या किसी व्यक्ति को केन्द्र करके ही समस्या नहीं है। गुरुवाद की परिस्थितियों में एक व्यक्ति द्वारा और यहां तक कि एक कमेटी के द्वारा भी और भी अधिक सूक्ष्म रूप में व्यक्तिपूजा को चलन में, व्यवहार में लाया जा सकता है। **इसलिए व्यक्तिपूजा को निर्मूल करने और इसके जहरीले असर को पूरी तरह से दूर करने का एकमात्र जरिया है ऑथोरिटी बोध की यांत्रिक समझ की जगह ऑथोरिटी बोध की द्वन्द्वात्मक समझ लाना; औपचारिक जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता के चलन को छोड़कर जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धांतों को वास्तव में कायम करना और इसके लिए कॉमरेडों की सैद्धांतिक चेतना के मान को ऐसे स्तर तक ऊंचा उठाना कि ''तर्क-वितर्क के जरिये चर्चा-बहस के द्वारा फैसले पर पहुंचना'' सुनिश्चित हो जाये।** दु:ख की बात यह है कि जो परिस्थितियां व्यक्तिपूजा को पनपाने और इसे बढ़ने में सहायक हुई थीं, उन्हें दूर करने के बजाय स्वयं ख्रुश्चेव और सीपीएसयू के अन्य नेतागण व्यक्ति स्तालिन से लड़ने की कोशिश कर रहे हैं। एक जीवित व्यक्ति का मामला हो, तो उस व्यक्ति के खिलाफ इसलिए लड़ना पड़ सकता है कि उसे और ज्यादा जटिलता पैदा करने से रोका जा सके। लेकिन इस मामले में तो वह सवाल ही पैदा नहीं होता, क्योंकि व्यक्तिपूजा के चलन का आरोप जिस व्यक्ति पर लगाया गया है, उस व्यक्ति की तो बहुत पहले मृत्यु हो चुकी है। शेष रह गयी है सिर्फ व्यक्तिपूजा और इसे पैदा करने वाली

परिस्थितियां। स्तालिन एक महान क्रांतिकारी थे। पार्टी एवं प्रशासन से लालफीताशाही और अफसरशाही को दूर करने के लिए उनका उदात्त आह्वान, पार्टी व स्तालिन के प्रति अपनी वफादारी का दिखावा करने की कला में उस्ताद चाटुकारों के खिलाफ उनका तीव्र व्यंग्य प्रहार, निकम्मे बातूनियों को पार्टी से निकाल देने के मामले में उनका दृढ़ निश्चय–ये सभी बातें सीपीएसयू की 17वीं पार्टी कांग्रेस में उनकी रिपोर्ट में शामिल हैं, जो अभी भी हमारे कानों में गूंज रही हैं। न जाने कितना दु:खदायी हश्र हुआ कि ऐसे एक परीक्षित क्रांतिकारी का भी सिर घुमा दिया गया था! कितना बड़ा पतन! घटनाओं की दिशा, अंतिम परिणति क्या होगी, इसको केवल ईमानदारी व निष्ठा निर्धारित नहीं करती, बल्कि पते की बात यह है कि प्रक्रिया निर्धारित करती है। मार्क्सवाद की इस शिक्षा की सत्यता को स्तालिन के जीवन ने हमें एक बार फिर दिखा दिया है। ईमानदारी और निष्ठा-लगन होते हुए भी गलत प्रक्रिया अपनाना निश्चय ही हमें नाकामी के दलदल में फंसा देगा। स्तालिन का जीवन एक बार फिर यह साबित कर देता है कि नेता के प्रति अंधभक्ति व अंध समर्थन से हम न केवल अपने, बल्कि उस नेता के भी पतन को न्योता दे देते हैं, जिन्हें हम देवता तुल्य बना डालते हैं।

## नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में गलतफहमी

नेतृत्व के प्रति अंधभक्ति की भावना ने विश्व साम्यवादी आन्दोलन पर भी विनाशकारी प्रभाव डाले हैं। विश्व साम्यवादी आन्दोलन में नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका पर बल देते समय विश्व साम्यवादी आन्दोलन के मार्गदर्शन के लिए आवश्यक द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया गया। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के पार्टी जीवन में स्तालिन द्वारा हासिल की गयी स्थिति ने सीपीएसयू और अन्य कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच संबंध को भी उसी ढर्रे का बनाने का काम किया। अर्थात ऑथोरिटी की द्वन्द्वात्मक भावना के बजाय उसी तरह के अंध ऑथोरिटी बोध ने वहां भी काम किया।

फलस्वरूप 'प्राइम मूवर' यानी प्राथमिक प्रेरक की उसी यांत्रिक धारणा ने कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच आपसी संबंधों को संचालित किया। मामला ऐसा हो गया था कि हर सवाल पर सीपीएसयू ही फैसला लेगी और बाकी सब कम्युनिस्ट पार्टियों का काम था सीपीएसयू के इस स्टैण्ड को अंध समर्थन देते जाना। नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में इस तरह का विचार मार्क्सवाद-लेनिनवाद से मेल नहीं खाता है, वह इसका विपरीतधर्मी है। **विश्व साम्यवादी आन्दोलन में नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी का विचार न तो पहले से यह मान लेता है कि हरेक सवाल पर हर समय ही नेतृत्वकारी पार्टी का नेतृत्व चिरस्थायी और अपरिवर्तनीय रहेगा और न ही यह मायने देता है कि नेतृत्वकारी पार्टी के प्रति अंधभक्ति रखनी होगी तथा नेतृत्वकारी पार्टी जो फैसला करेगी उसी को अंधे की तरह मान कर चलना होगा।** इसके विपरीत नेतृत्वकारी पार्टी के साथ ये संघर्ष जो विरोधात्मक प्रकृति के नहीं होते हैं, इन संघर्षों और नेतृत्वकारी पार्टी के साथ चिंतन की अन्तर्क्रिया को पहले से ही मानकर चलता है और जो सामूहिक नेतृत्व के लिए अपरिहार्य द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को स्वरूप देने में वस्तगुत रूप से मदद करते हैं। यह बात भी समझी जाती है कि किसी खास सवाल पर नेतृत्वकारी पार्टी की बजाय किसी अन्य पार्टी द्वारा भी सही लाइन पेश की जा सकती है। ऐसा होने से अन्य किसी पार्टी द्वारा पेश की गयी सही लाइन चूंकि इस सवाल पर सामूहिक नेतृत्व को ही अभिव्यक्त कर रही होती है, इसलिए वह सभी के द्वारा मान ली जाती है। अवश्य ही यह बात नेतृत्वकारी पार्टी की पोजीशन को नहीं बदल देती और दूसरी किसी पार्टी को नेतृत्वकारी पार्टी नहीं बना देती, क्योंकि नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के तौर पर इसकी पोजीशन और भी बहुत से कारकों पर निर्भर करती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विश्व में पहले समाजवादी राष्ट्र की संस्थापक पार्टी के नाते, अपने खुद के देश में समाजवादी निर्माण कार्य के अमूल्य अनुभव से सम्पन्न एक पार्टी के नाते, वैज्ञानिक, प्रोद्यौगिकी और अन्य संसाधनों की अधिकारी होने के साथ-साथ

विश्व समाजवादी खेमे की मुखिया होने के नाते सीपीएसयू विश्व साम्यवादी आन्दोलन में नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी की पोजीशन रखती है और आगामी बहुत दिनों तक वह अपनी इस पोजीशन को बनाये रखेगी।* लेकिन इस निर्विवाद तथ्य का मायने यह नहीं है कि सदा सभी सवालों पर सिर्फ सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ही फैसला करेगी, वही लाइनें तय कर देगी और अन्य कम्युनिस्ट पार्टियों का काम होगा इनका अंधे की तरह समर्थन करते जाना। बड़े दु:ख की बात है कि स्तालिन के नेतृत्व काल में ठीक यही चीज हुई और अधिकांश कम्युनिस्ट पार्टियां सीपीएसयू की मोहताज, अंध अनुगामी बनकर रह गयी थीं। यही नहीं कि इसने सामूहिक नेतृत्व पैदा होने के लिए जरूरी द्वन्द्वात्मक चिंतन प्रक्रिया और पद्धति को ही खतरे में डाल दिया था, बल्कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ किसी भी मतभेद को सोवियत विरोधी रुख अख्तियार करने और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तज देने का कलंक लगा देने का एक अस्वास्थ्यकर रुझान भी पैदा कर दिया था। इससे ज्यादा गलत और कुछ नहीं हो सकता है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना से संचालित कोई भी कम्युनिस्ट पार्टी निश्चित रूप से अन्य किसी कम्युनिस्ट पार्टी से किसी मामले में भिन्न मत रख ही सकती है और जहां तक सीपीएसयू का संबंध है, उससे भी वह भिन्न मत रख सकती है। ऐसे मामले में किसी भी कल्पना के द्वारा इसको सोवियत-विरोधी और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद-विरोधी होने की संज्ञा नहीं दी जा सकती। लेकिन खेद की बात है कि पुराना रुझान आज भी साम्यवादी दुनिया में बरकरार है, वरना 22वीं पार्टी कांग्रेस में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा स्तालिन के बारे में लिये गये फैसले और उठाये गये कदम निश्चय ही किसी विश्व साम्यवादी मंच द्वारा लिये फैसले या उठाये गये कदम नहीं हैं, उनके साथ अल्बानियाई पार्टी ऑफ लेबर की असहमति को सोवियत-विरोध और सर्वहारा

---

* पहले ही कहा जा चुका है कि बाद में सीपीएसयू के नेतृत्व पर संशोधनवादियों का कब्जा हो चुका था।

अन्तर्राष्ट्रीयतावाद-विरोध कैसे करार दिया जा सकता है? सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ किसी विषय पर सहमत न हो पाने का मायने ही सोवियत-विरोध, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद-विरोध हो जाता है–इस तरह सिर्फ वही कह सकते हैं, जो औपचारिकतावाद से ग्रस्त हैं और विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता बनाये रखने में जो जटिल द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया काम करती है–उसकी सही समझ की जिनमें कमी है। मतभेद का मायने ही विरोध कतई नहीं होता–यह समझने में वे गलती करते हैं और वे भूल जाते हैं कि विचारों की अन्तर्क्रिया और द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से संघर्ष के जरिये ही सामूहिक नेतृत्व निर्मित होता है और काम करता है। इस संघर्ष का परित्याग कर देने से वह निर्मित नहीं हो सकता। विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता जिस तरह औपचारिक यांत्रिक संबंध पर आधारित नहीं होती है, उसी तरह उनके बीच मतभेद भी विराधात्मक प्रकृति का नहीं होता है–**यह बात हमें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यबोधों से बुनियादी तौर पर अलग जीवन मूल्यों की नयी समझ के आधार पर 'एकता-संघर्ष-एकता' के इस द्वन्द्वात्मक सिद्धांत के द्वारा ही विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच आपसी संबंध संचालित होते हैं, विश्व सर्वहारा क्रांति को सफल करने और विश्व साम्यवादी समाज कायम करने के साझे लक्ष्यों-उद्देश्यों से विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच संबंध मजबूत होता है।** विश्व साम्यवादी आन्दोलन उन दिनों जितने महत्वपूर्ण सवालों से रूबरू था उनमें से लगभग सभी प्रमुख सवालों पर स्तालिन की अगुआई में अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी नेतृत्व हालांकि बुनियादी तौर पर सही मार्गदर्शन देने में सक्षम था, फिर भी त्रासदी यह है कि वह औपचारिक चिंतन प्रक्रिया से मुक्त नहीं था। हम देखते हैं कि उसी गैर-द्वन्द्वात्मक और औपचारिक चिंतन प्रक्रिया, उसी कार्यप्रणाली का आज भी अनुसरण किया जा रहा है। इसलिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद के रास्ते से बुनियादी तौर पर भटकने का खतरा अभी भी पूरी तरह बना हुआ है।

## सोवियत संघ की विदेश नीति बनाम विश्व सर्वहारा क्रांति का कार्यक्रम

राष्ट्रीय स्तर से निर्देशित सोवियत संघ की विदेश नीति के साथ विश्व साम्यवादी आन्दोलन के कार्यक्रम का संबंध समझने के मामले में भी औपचारिक चिंतन प्रक्रिया के कारण भ्रांति व्याप्त है। ज्यादातर देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां इन दोनों को एक ही और अभिन्न समझती हैं। यह धारणा एकदम गलत है। इसमें कोई दो राय नहीं कि सोवियत संघ की विदेश नीति और विश्व साम्यवादी आन्दोलन का कार्यक्रम एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों ही विश्व समाजवादी व्यवस्था कायम करने के साझे हित पर आधारित हैं, लेकिन इसके बावजूद इन दोनों में एक द्वन्द्व है। सोवियत विदेश नीति का लक्ष्य है–समाजवादी ताकतों को सुदृढ़ करना, पूंजीवादी–साम्राज्यवादी ताकतों में द्वन्द्व को और भी बढ़ाना और तीव्रतर करना, जंगखोर साम्राज्यवादी खेमे में तुलनात्मक रूप से कम दुस्साहसी ताकतों को अधिक दुस्साहसी ताकतों से अलग–थलग कर देना, विश्व शांति को बनाये और बचाये रखना तथा इन सब के जरिये विश्व सर्वहारा क्रांति की प्रगति, विकास और सफलता की वस्तुगत परिस्थितियों को तैयार करना। विश्व सर्वहारा क्रांति के कार्यक्रम का लक्ष्य है–देश–देश में क्रांति सफल करने की आम नीति व दिशा निर्देशन प्रदान करना, जबकि औपनिवेशक देशों, अर्द्ध औपनिवेशक देशों और पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों का काम है–अपने–अपने देश की धरती पर इन आम नीतियों व दिशा निर्देशनों का सृजनशील ढंग से प्रयोग करना। सोवियत संघ की विदेश नीति के लिए अपनायी गयी कार्रवाइयों को अथवा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट मंच के आम दिशा–निर्देशनों व नीतियों को अंधता के साथ तोता रटन्त की तरह हूबहू दोहराते जाना उनका काम नहीं है। आम के साथ खास का जो द्वन्द्व रहता है, उसी के आधार पर द्वन्द्व का अध्ययन करना द्वन्द्व सिद्धांत हमें सिखाता है। हर जिम्मेदार कम्युनिस्ट इस बात को जानता है कि विश्व साम्यवादी मंच की आम नीति तो आम दिशा–निर्देशक सिद्धांत प्रदान करती है, जिसको अलग–अलग देश में अलग–अलग ढंग से प्रयोग करना होता है।

अलग-अलग देश में अलग-अलग परिस्थितियां होती हैं। उन ठोस परिस्थितियों का ठोस विश्लेषण और अलग-अलग वस्तुगत परिस्थितियों वाले अलग-अलग देशों में इन आम दिशा-निर्देशक सिद्धांतों का ठोस यानी विशेषीकृत प्रयोग ही मार्क्सवाद की प्राणसत्ता है। इसके बिना मार्क्सवाद एक जड़सूत्र बन जाता है। भिन्न-भिन्न देशों में परिस्थितियों में भिन्नता होने से ही विश्व सर्वहारा क्रांति के आम कार्यक्रम और एक खास देश की खास क्रांति के कार्यक्रम के बीच एक द्वन्द्व भी रहता है। आम के साथ खास का यह जो द्वन्द्वात्मक रिश्ता है, इसको जो नजरअंदाज करता है वह औपचारिकतावाद की गलती कर बैठता है। अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट मंच द्वारा लिये गये विश्व सर्वहारा क्रांति के आम कार्यक्रम और एक खास देश में कम्युनिस्ट पार्टी के क्रांति के कार्यक्रम का संबंध द्वन्द्वात्मक होने से एकमात्र यही निष्कर्ष निकाल लेना विज्ञानसम्मत है कि सोवियत संघ की विदेश नीति और किसी एक खास देश में कम्युनिस्ट पार्टी के क्रांति के कार्यक्रम के बीच मिलनात्मक प्रकृति के द्वन्द्व होते हैं। आम और खास के बीच द्वन्द्व तथा सोवियत संघ की विदेश नीति और उनके अपने-अपने देश की क्रांति के कार्यक्रम के बीच द्वन्द्व की समझ की कमी ने ही स्तालिन के नेतृत्वकाल में ज्यादातर कम्युनिस्ट पार्टियों को रोबोट बना डाला था। तब से आज तक स्थिति में वैसे कोई खास सुधार नहीं हुआ है। एक रोबोट की चाहे जितनी भी ताकत क्यों न हो, वह विश्व सर्वहारा क्रांति की आम नीति को उसके अपने देश की सरजमीन पर रचनात्मक ढंग से कभी प्रयोग नहीं कर सकता और न ही जनता को क्रांति व सत्ता की ओर ले जा सकता है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) का इतिहास इस रोबोट की तरह ही काम करने का इतिहास है। इस सूरतेहाल के लिए जिम्मेदार दोषों से अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी नेतृत्व को भी बरी नहीं किया जा सकता। हमने देखा है कि जब कभी हमने साम्यवादी आन्दोलन की इन सब कमियों-खामियों को विदेश की विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के ध्यान में लाने की कोशिश की, तो महज इसी वजह से हमारी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया कि हम भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

(सीपीआई) के आलोचक थे, जिस पार्टी का इतिहास ही है मार्क्सवाद-लेनिनवाद से बुनियादी भटकाव के अन्तहीन सिलसिले का इतिहास और चीन-भारत सीमा विवाद के सवाल पर भारतीय पूंजीवादी राष्ट्र के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के समर्थन में उनका अंध-राष्ट्रवादी रुख जिसकी ताजातरीन मिसाल है। अगर मान भी लिया जाये कि हम कम्युनिस्ट नहीं हैं (हालांकि यह एक बिल्कुल गलत धारणा है जो विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच आपसी संबंधों के मामले में औपचारिकतावादी समझ से पैदा हुई है और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के दुष्प्रचार से बलवती हुई है), फिर भी हमारी बात की विवेचना करके देखने में हर्ज क्या है? क्या लेनिन ने अपने वर्ग दुश्मनों तक की बात नहीं सुनी थी? लेकिन हम दु:ख के साथ पाते हैं कि सीखने के इस लेनिनीय गुण का काफी हद तक अभाव है। इस संदर्भ में हम यह और कहना चाहते हैं कि कम्युनिस्टों में भी किसी बात की सटीकता व तर्कसंगतता की कसौटी पर उस बात के गुण-दोष का विचार न करके इस कसौटी पर विचार करने की बुर्जुआ आदत पड़ गयी है कि उसके पीछे कितनी सांगठनिक ताकत है, जो आदत मार्क्सवाद-लेनिनवाद की जीवंत भावना के सर्वथा विपरीत है। इस तरह के रुख को अगर लेनिन द्वारा बढ़ावा दिया जाता, तो जर्मनी की शक्तिशाली सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के खिलाफ स्पार्टाकस दल को उनका अपार समर्थन नहीं मिल पाता। विश्व साम्यवादी आन्दोलन से व्यक्तिपूजा का अगर उन्मूलन करना है, तो नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के तौर पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) की भूमिका को इस तरह से समझने से काम नहीं चलेगा कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन में प्रत्येक सवाल पर ही नेतृत्व निरपवाद रूप से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का ही रहेगा और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सब मामलों में सहमत न हो पाने का मायने ही सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद को त्याग देना है। इस तरह के औपचारिकतावादी निष्कर्ष निकालना छोड़कर इसकी जगह ''एकता-संघर्ष-एकता'' की द्वन्द्वात्मक संबंधों की समझ कायम करनी होगी, जो स्पष्टत: अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी मंच के सामूहिक नेतृत्व

को मजबूत करने के उद्देश्य से सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के साथ विचारों के संघर्ष और अन्तर्क्रिया को पहले से ही मानकर चलती है। साफगोई के साथ कहें तो इस तरह के द्वन्द्वात्मक नजरिये और रुख-रवैये का कोई भी लक्षण हमें देखने को नहीं मिलता है।

## वही गलत पद्धति, उसी तरह की अंधता आज भी बरकरार है

अतीत में जिस तरह स्तालिन को अंधभक्ति भाव से 'प्राय: देवता' के स्तर पर उठा दिया गया था, उनके समय में साम्यवादी आन्दोलन जिन सब बुराइयों से ग्रस्त था, उनके लिए व्यक्तिगत रूप से उन्हें जिम्मेदार ठहराते हुए वर्तमान में ठीक उसी तरह अंधभक्ति भाव से ही उन्हें 'शैतान' के रूप में चित्रित किया गया है। अतीत में जिस तरह सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी एवं स्तालिन की रहनुमाई में अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नेतृत्व को कभी गलती न करने वाला और आलोचना से परे माना हुआ था, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के निर्णय से मतभेद रखने वाले हर किसी को कम्युनिज्म-विरोधी, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद-विरोधी होने का दोषी ठहराया जाता था, उसी तरह वर्तमान में ख्रुश्चेव के नेतृत्व को कभी गलती न करने वाला और आलोचना से परे माना जाता है तथा सीपीएसयू के किसी निर्णय से मतभेद रखने वाले को सोवियत-विरोधी और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद-विरोधी करार दे दिया जाता है। तब रुख-रवैये, नजरिये और चिंतन प्रक्रिया में फर्क कहां है? अतीत की तरह ही ऑथोरिटी के प्रति वही अंधभावना, वही गैर-द्वन्द्वात्मक चिंतन प्रक्रिया और आन्दोलन पद्धति, विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच संबंधों के क्षेत्र में उसी तरह की औपचारिकतावादी सोच-समझ काम कर रही है जिस प्रकार की स्तालिन के नेतृत्वकाल में आम तौर पर व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन-पूजा के पनपने और बढ़ने के लिए जिम्मेदार थी। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी नेतृत्व से हमारा अनुरोध है कि स्तालिन काल की इन सब कमियों-खामियों और सीमाबद्धताओं से पार पाना ही होगा। इस उद्देश्य के लिए आइए, एक सही प्रक्रिया अपनायें। सही प्रक्रिया के

अभाव में और व्यक्तिपूजा पनपने के मूल कारण और परिस्थितियों को दूर किये बिना सामूहिक नेतृत्व संबंधी लेनिनीय सिद्धांत और चलन को दोबारा कायम करने की आशा करना अज्ञानता ही है। अन्ततः शेष सभी रास्ते स्तालिन–पूजा के बदले इसी तरह की कोई अन्य नुकसानदेह पूजा–केन्द्रीय कमेटी पूजा, नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी पूजा, यहां तक कि ख्रुश्चेव पूजा भी चालू कर देंगे। इस संभावित खतरे के प्रति कोई जिम्मेदार कॉमरेड उदासीन नहीं रह सकता है।

## वैचारिक मान का नीचे गिरना ही गलती का कारण है

लेकिन आखिर किस वजह से ये सब गलतियां हुई हैं? किस कारण से विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों ने ऑथोरिटी बोध की द्वन्द्वात्मक भावना–धारणा को गुरुवाद के साथ गड्डमड्ड कर डाला? क्यों वे जनवादी केन्द्रीयता के बजाय औपचारिक जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता के इस चलन को पकड़ नहीं पायीं, गहराई से समझ नहीं सकीं? क्यों उन्होंने ''एकता-संघर्ष-एकता'' के द्वन्द्वात्मक सिद्धांत को छोड़ दिया और उसकी बजाय विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता के बारे में एक औपचारिकतावादी भावना–धारणा ग्रहण कर ली? क्यों उन्होंने नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के विचार को हरेक मुद्दे पर नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के एक अपरिवर्तनीय नेतृत्व के विचार के साथ गड्डमड्ड कर डाला? हमारी राय में, ये सब गलतियां अधिकांश कम्युनिस्टों की चेतना के आम स्तर के बहुत नीचे गिर जाने का ही नतीजा थीं। यह बात सच है कि लेनिनोत्तर काल में औपनिवेशिक, अर्द्ध औपनिवेशिक और पूंजीवादी देशों में सांगठनिक तौर पर कम्युनिस्ट आन्दोलन का जबरदस्त विकास हुआ था, लेकिन यह विकास स्वयमेव साबित नहीं कर देता है कि कम्युनिस्ट आन्दोलन के सांगठनिक विकास के साथ समानुपातिक दर से कम्युनिस्टों की वैचारिक चेतना का मान भी उतने ही उन्नत स्तर पर पहुंच गया था। असल में यह ऊंचा नहीं उठा था–उपरोक्त गलतियां इसका पक्का सबूत हैं। साम्यवादी आन्दोलन की सांगठनिक प्रगति के बावजूद वैचारिक स्तर में ऐसी गिरावट आ सकती है–यह

कोई नयी परिघटना नहीं है। खुद लेनिन को ही अपने जीवनकाल में इस परिघटना पर विशेष ध्यान देना पड़ा था। हमारे मतानुसार कम्युनिस्टों की चेतना के आम स्टैण्डर्ड में गिरावट मुख्यतः दो कारकों की वजह से आयी है। पहला कारक है, लेनिनोत्तर काल में यह देखा गया है कि जनजीवन और वर्ग संघर्ष की नयी-नयी समस्याओं की अधिकता और प्राकृतिक विज्ञान में हुई हैरतअंगेज प्रगति के चलते मार्क्सवाद-लेनिनवाद का जो दार्शनिक विकास कराना चाहिए था, वह नहीं कराया गया। यह कसर रह जाने के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं, लेकिन यह निस्संदेह सच है। इसकी सच्चाई को एक साधारण से उदाहरण से साबित किया जा सकता है। इस बात से शायद कोई आदमी इनकार नहीं कर पायेगा कि वैचारिक क्षेत्र में व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता के बारे में बुर्जुआ भावना-धारणा आज विकसित देशों में वर्ग संघर्ष के विकास के रास्ते में एक कठिन बाधा है। मानवतावादी मूल्यबोधों बनाम सर्वहारा मूल्यबोधों की एक तुलनात्मक रूप से समीक्षात्मक चर्चा करना हालात का तकाजा है। लेकिन इस समस्या पर प्रामाणिक और समग्र रूप से चर्चा करने का दावा करने वाली कोई भी रचना लेनिनोत्तोर काल में प्रकाशित नहीं हुई है। दूसरा कारक है, जो हजारों-हजार तरुण कम्युनिस्ट आन्दोलन के भंवर में प्रवाह में खींच लाये गये उनकी वैचारिक चेतना का मान ऊंचा उठाने के लिए पार्टी में निरन्तर वैचारिक संघर्ष चलाने के काम की आम तौर पर सभी कम्युनिस्ट नेताओं द्वारा काफी हद तक अवहेलना की गयी और कहावत वाले एक चक्षु-हिरण की तरह कार्यकर्ताओं को अधिकांशतः सांगठनिक गतिविधियों में ही व्यस्त रखा। कम्युनिस्ट आन्दोलन की अति द्रुत और विराट प्रगति से आत्मसंतुष्ट भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के नेताओं ने सिद्धांत के प्रति एक बेरुखी का मनोभाव तक भी कार्यकर्ताओं में पैदा कर दिया था। पार्टी के आम कार्यकर्ताओं से उन्होंने बस यही चाहा कि वे पार्टी के प्रति वफादार रहें और अंधे की तरह व्यावहारिक काम करते जायें। दूसरे-दूसरे देशों में जो परिस्थिति व्याप्त थी, उसके बारे में तो हमारी कोई प्रत्यक्ष जानकारी नहीं है, लेकिन भारत में हमने जो देखा है और पूर्व उल्लेखित

गलतियों के कारण का विश्लेषण करने से जो हमें लगा है, वह यह है कि कम्युनिस्ट आन्दोलन के सांगठनिक विकास पर आत्मसंतुष्टि की वही भावना और सिद्धांत के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण को तुच्छ समझने का वही रुझान तथा पार्टी के सदस्यों के व्यावहारिक कामकाज व पार्टी के प्रति उनकी वफादारी पर एकतरफा जोर देना आदि बातें हर देश में काम कर रही थीं। वैचारिक संघर्षों के महत्व की अवहेलना करने के नतीजे के तौर पर हमारे देश में कम्युनिस्टों की चेतना का मान गिरते-गिरते इतना नीचे गिर गया है कि आज के दिन जीवन और परिवेश में जो नयी-नयी समस्याओं की बहुतायत दिखाई दे रही है, उससे निपटने के लिए आवश्यक चेतना के मान की बात तो दूर रही, यहां तक कि लेनिन के समय भी वैचारिक चेतना का मान जिस स्तर पर था, वह भी मुश्किल से ही कहीं नजर आता है। यह बात मान लेना बेहतर होगा कि वर्तमान समय में कम्युनिस्ट आन्दोलन की वृद्धि और विकास जिन वजहों से हो रहा है वे हैं—वर्तमान में हो रहा साम्राज्यवाद का ह्रास, उपनिवेशों और अर्द्ध उपनिवेशों में साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन की आम जनता को मानवतावादी अपील, विकसित पूंजीवादी देशों में हो रहे शोषण के खिलाफ उदार भावना एवं पूंजीवादी व्यवस्था पर समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता। आज दुनिया भर में कम्युनिस्ट आन्दोलन में शामिल होने वालों और इस आन्दोलन को मजबूत करने वालों में सभी लोग सचेत साम्यवादी दृढ़ मत के आधार पर कम्युनिस्ट आन्दोलन के प्रति आकर्षित या इससे जुड़े हुए नहीं हैं। वस्तुतः उनमें से बहुत ही कम लोग कम्युनिस्ट शिक्षा से अग्निदीक्षित हो पाये हैं। यही स्थिति अगर चलती रही, तो कम्युनिस्टों के सामान्य वैचारिक स्तर के ऊंचा उठने की संभावना बहुत ही क्षीण है। इसलिए चिंतन और जीवन के सभी पहलुओं को समेटे हुए एक समग्र वैचारिक संघर्ष अनवरत चलाते रहना समय की मांग है।

## संशोधनवादी प्रवृत्ति

जीवन, चिंतन और संगठन के सामने खड़ी होने वाली नयी-नयी समस्याओं की रोशनी में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की समझ को समृद्ध

करना अवश्य ही आज समय का तकाजा है। लेकिन यह लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों की सही समझ के और साम्यवादी आन्दोलन निर्मित करने के क्षेत्र में स्तालिन की भूमिका और योगदानों की कद्र के आधार पर ही हो सकता है। इसके बिना संशोधनवाद के दलदल में डूब जाने की पूरी-पूरी संभावना रहेगी। हम यह कहने को विवश हैं और बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टी होने के नाते यह दिखाना हम अपना जरूरी फर्ज समझते हैं कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के वर्तमान नेतृत्व द्वारा आज की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के अपने विश्लेषण में, युद्ध और शांति के सवाल पर अपनी बातचीत में, क्रांति के आम नियमों की अपनी अवधारणा में, दो विश्व व्यवस्थाओं के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति के प्रयोग के क्षेत्र में अपने दृष्टिकोण में, अल्बानिया समाजवादी राष्ट्र और अल्बानियाई पार्टी ऑफ लेबर के खिलाफ उठाये गये अपने कदमों में तथा सर्वोपरि स्तालिन के खिलाफ उठाये गये कदम जो विस्तालिनीकरण के ही समतुल्य हैं, इनमें जो प्रवृत्ति उजागर हो रही है, वह संशोधनवाद के दलदल में डूब जाने के खतरे से भरी है। कॉमरेड्स, इस बात से कोई इनकार नहीं है कि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पूंजीवाद-साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने का एक अभूतपूर्व मौका हमारे सामने पेश करती है या यूं कह सकते हैं कि हम आज विश्व सर्वहारा क्रांति की एकदम दहलीज पर आ पहुंचे हैं। इन मौकों को हाथ से न जाने देना और विश्व सर्वहारा क्रांति के हित में इनका भरपूर इस्तेमाल करना समय की मांग है। लेकिन वस्तुतः यह बड़ी खेदजनक बात है कि जब परिस्थितियां इतनी अनुकूल हैं, तब भी हम कम्युनिस्ट अपनी चेतना को और भी उन्नत करने के बजाय वैचारिक भ्रमजाल की भूल-भूलैया में भटकते फिर रहे हैं; अपनी एकता को और भी सुदृढ़ करने और विश्व साम्यवादी समाज कायम करने की ओर तेजी से डग भरने की बजाय अपनी एकता को और भी कमजोर कर रहे हैं; पूंजीवादी देशों में कम्युनिस्ट पार्टियों को संसदीय भ्रममोह से मुक्त होने में मदद करने की बजाय उन्हें इस तरह के भ्रमों से ग्रस्त कर डालने की इजाजत देते जा रहे हैं; ऐसा आचरण करते जा रहे हैं कि पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट

पार्टियां धीरे-धीरे महज संसदीय पार्टियां बनकर रह जायें। जितनी जल्दी इस परिस्थिति से उबर सकें उतना ही बेहतर है। आइए, इस काम में हम सब जी-जान से जुट जायें।

## 'सत्ता के दुरुपयोग' संबंधी तथ्य अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट मंच पर पेश किये जायें

व्यक्तिपूजा के चलन और पार्टी का अंदरूनी जनवाद भंग करने का आरोप स्तालिन के खिलाफ लगाने के अलावा भी उन्हें सत्ता का दुरुपयोग करने का दोषी ठहराया गया है, जिसके फलस्वरूप असंख्य निरपराध लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। 22वीं पार्टी कांग्रेस की रिपोर्ट में ख्रुश्चोव ने इस तरह की कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का परोक्ष रूप से उल्लेख किया है और इन घटनाओं को दिखाकर ही उन्होंने अपने समापन भाषण में कहा है, ''यह है व्यक्तिपूजा का मायने।'' हमारे मतानुसार यह एक अति सरलीकृत बयान है, क्योंकि निरपराध लोगों का जान गंवाना चाहे कितना ही वेदनादायक क्यों न हो, यह स्वयमेव साबित नहीं कर देता कि निरपराध लोगों की हत्याओं के बिना व्यक्तिपूजा का चलन भली-भांति नहीं हो सकता। व्यक्तिपूजा का उद्गम काफी गहरे में है; हम पहले ही इसकी चर्चा कर चुके हैं। यह निर्विवाद है कि स्तालिन के समय में राष्ट्रविरोधी कार्यकलापों में लिप्त होने के संदेह में कई निरपराध लोगों को भी जान गंवानी पड़ी थी। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) की 18वीं पार्टी कांग्रेस में अपनी रिपोर्ट में स्तालिन ने खुद ही यह बात स्वीकार की थी। 18वीं पार्टी कांग्रेस की रिपोर्ट में स्तालिन ने कहा था, ''इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पार्टी से व्यापक पैमाने पर निष्कासनों की घटनाओं के सिलसिले में कुछ गंभीर गलतियां हुई थीं। जितनी गलतियां होने की अपेक्षा की गयी थी, खेदजनक है कि गलतियां उससे कहीं ज्यादा हुई हैं। निस्संदेह भविष्य में इस तरह के व्यापक पैमाने के निष्कासनों के रास्ते का सहारा लेने की हमें और जरूरत नहीं पड़ेगी। किन्तु 1933-36 में जो व्यापक पैमाने पर निष्कासन किये गये थे, उनको करने के अलावा और कोई उपाय भी तो नहीं

था। कुल मिलाकर उनका नतीजा भी फायदेमंद ही निकला है।'' इसलिए यह कहना ठीक नहीं है कि इन सब खेदजनक घटनाओं को पार्टी से छिपाकर रखा गया था; बल्कि इसके उलट इस मामले में जो गलतियां हुई थीं, उन समेत सभी घटनाओं को स्तालिन ने पार्टी कांग्रेस के सामने रखा था, उठाये गये कदमों का औचित्य पार्टी को समझाकर संशयमुक्त किया था और अपनी स्थिति को सही-सही स्पष्ट कर दिया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि जितनी गलतियों की अपेक्षा की गयी थी, इंसाफ करने के मामले में ज्यादती करने की गलतियां उससे कहीं ज्यादा हुई थीं। लेकिन इन ज्यादतियों के लिए व्यक्तिगत तौर पर स्तालिन की अपनी जिम्मेदारी कितनी थी और राजसत्ता में जड़ें जमाये बैठी अफसरशाही कितनी दोषी थी, यह अभी भी तय किया जाना है, जबकि यह किये बिना ही व्यक्तिगत तौर पर स्तालिन को ही नरसंहार करने का दोषी ठहराया जा रहा है। यह कहना एक बात है कि पार्टी के नेता और प्रशासन तंत्र के मुखिया होने के नाते स्तालिन को इस बात को पहले से ही ध्यान में रखना चाहिए था कि कोई गलती न हो और सही-सही जांच-परख हो। वह सब करने में स्तालिन विफल रहे और उस हद तक उनसे भी कर्तव्य निभाने में चूक हुई और इतने सारे निरपराध लोगों की जान की हानि के लिए वे जिम्मेदार थे। लेकिन स्तालिन पर व्यक्तिगत बैरभाव बरतने का आरोप लगाकर उन्हें मुजरिम ठहराना एक बिल्कुल भिन्न बात है। स्तालिन ने जानबूझकर और उद्देश्यपूर्ण ढंग से सत्ता का दुरुपयोग किया था—तथ्यों सहित इसका कोई सबूत अगर है तो उन तथ्यों की प्रामाणिकता जांचने के लिए ही नहीं, बल्कि उनकी सही अर्थ-व्याख्या पर पहुंचने के लिए भी उनको अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी मंच के समक्ष पेश करना चाहिए। तथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन तथ्यों की सही-सही अर्थ व्याख्या करना और भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। एक ही तरह के तथ्यों की अर्थ-व्याख्याओं में भिन्नता रहने के कारण उन्हीं तथ्यों से साम्राज्यवादी-पूंजीवादी और कम्युनिस्ट भिन्न-भिन्न निष्कर्षों पर पहुंच जाते हैं। भारतीय बुर्जुआ वर्ग के टुकड़खोर एजेन्ट भारत में हो-हल्ला मचा रहे हैं कि ''विज्ञानसम्मत रूप में जिसे इतिहास

कहते हैं, सोवियत रूस में वैसा कुछ नहीं है; कम्युनिस्टों की तथ्यों के प्रति जरा भी आस्था नहीं है; वे इतिहास को तोड़-मरोड़ देते हैं और ऐसे ढंग से इतिहास का पुनर्लेखन कराते हैं कि उनके उद्देश्य के माफिक आये। स्तालिन जब सत्ता में थे, तब उन्होंने सोवियत रूस (यूएसएसआर) के इतिहासकारों को हुकुम देकर अपने हित में इतिहास लिखवाया था। अब स्तालिन चले गये हैं, ख्रुश्चोव सत्ता में हैं, इसलिए अब फिर अलग एक इतिहास लिखवाया जा रहा है।'' ये सब महानुभाव, जिनमें कॉलेजों-विश्वविद्यालयों में इतिहास के कुछ लेक्चरर और प्रोफेसर भी शामिल हैं, इतिहासवेत्ता कहने से जो सही मायने में समझा जाता है, ये लोग ठीक वे नहीं हैं। इन्होंने कालक्रम में घटनाओं का विवरण पेश करने वाली घटना पंजिका के साथ इतिहास को गड्डमड्ड कर डाला है और दोनों को एक चीज समझ लिया है। इतिहास का मायने महज तथ्यों का संकलन ही नहीं होता है। इतिहास का मायने साथ ही साथ उन तथ्यों का विज्ञानसम्मत ढंग से अध्ययन-विश्लेषण करना भी होता है। इन तथ्यों की सही-सही अर्थ-व्याख्या करने के इस मामले में बुर्जुआ वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच जमीन-आसमान का फर्क होता है। बुर्जुआ वर्ग के ये टुकड़खोर प्रचारक आम तौर पर कम्युनिस्टों के खिलाफ और खास तौर पर सोवियत संघ के खिलाफ जो कुत्साजनक प्रचार कर रहे हैं, उसका माकूल जवाब देने के लिए और तथ्यों की प्रामाणिकता जांच कर उनसे सटीक और समान अर्थ-व्याख्या कर निष्कर्ष पर पहुंचने के उद्देश्य से, ''स्तालिन द्वारा सत्ता के दुरुपयोग'' संबंधी सभी तथ्यों की अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी मंच के द्वारा जांच-परख करके देखने की जरूरत है। हम यह बात कहने के लिए मजबूर हैं कि 22वीं पार्टी कांग्रेस में ख्रुश्चेव ने जो सब तथ्य पेश किये हैं, उनसे हम ख्रुश्चेव से भिन्न निष्कर्षों पर पहुंचे हैं। इस बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे। अगर तथ्यों की अर्थ-व्याख्या कम्युनिस्टों में भिन्न-भिन्न हो, तो तथ्यों की प्रामाणिकता की जांच-पड़ताल करने और उनकी सही अर्थ-व्याख्या करके निष्कर्ष निकालने के लिए उन तथ्यों को अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी मंच के सामने पेश करना तो और भी अधिक जरूरी हो जाता है। **इसके**

**अलावा स्तालिन सिर्फ सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के ही नेता नहीं थे, बल्कि वे विश्व साम्यवादी आन्दोलन के भी नेता व शिक्षक थे। इसलिए स्तालिन के मूल्यांकन संबंधी किसी भी सवाल से सिर्फ सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ही अकेले सरोकार नहीं रखती है। इससे सभी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों का भी बराबर का सरोकार है। 22वीं पार्टी कांग्रेस में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने स्तालिन के खिलाफ जो सब कदम उठाये हैं, उन्होंने जिन कारणों से इतना ज्यादा महत्व ग्रहण कर लिया है, वे हैंः पहला, इन सब कदमों से विस्तालिनीकरण भी चालू हो सकता है। नतीजतन यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद की उस समझ के लिए ही चुनौती खड़ी कर देगा, जो स्तालिन की ही देन है और जो ट्रॉटस्कीवाद-टीटोवाद से बिल्कुल भिन्न है।** दूसरा, ख्रुश्चेव इन सब कदमों को सिर्फ सोवियत संघ की चारदीवारी में ही सीमाबद्ध नहीं रखना चाहते, बल्कि इसको वे विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा देश-देश में फैला देने पर आमादा हैं। विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों से यह आशा करना गलत होगा कि 'स्तालिन द्वारा की गयी ज्यादतियों संबंधी सभी तथ्यों को जानने, उनकी जांच-पड़ताल करने और इनकी अर्थ-व्याख्या करके सही निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले ही वे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा उठाये गये कदमों का अंधता के साथ समर्थन कर दें। स्तालिन के प्रति अंधभक्ति ने ही व्यक्तिपूजा को जन्म दिया था, इसलिए उसी तरह की अंधता को किसी तरह भी चलते रहने की इजाजत हरगिज नहीं दी जा सकती।

## जहां मानवतावाद समाप्त होता है, वहां से ही साम्यवाद की शुरुआत होती है

व्यक्ति की भूमिका का सही-सही मूल्यांकन करने के मामले में सिर्फ उसकी त्रुटियों और सीमाबद्धताओं का ही विचार-विश्लेषण, आकलन नहीं करना होता है, बल्कि उसकी भूमिका व योगदानों की भी यथोचित कद्र करनी जरूरी होती है। लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि 22वीं पार्टी कांग्रेस में पेश की गयी अपनी रिपोर्ट

में ख्रुश्चेव ने हालांकि कहा है, ''स्तालिन द्वारा पार्टी और साम्यवादी आन्दोलन के लिए की गयी महान सेवाओं का श्रेय स्तालिन को ही देना होगा और हम उनको यथोचित श्रेय देते हैं", लेकिन फिर भी 22वीं पार्टी कांग्रेस की कार्यवाहियों में स्तालिन द्वारा की गयी महान सेवाओं का कोई उल्लेख नजर नहीं आता है। उल्टे हमें उनके चरित्र के नकारात्मक पहलुओं यानी अवगुणों की ही एक फेहरिस्त मिलती है। **स्तालिन के जिन सब गुणों को स्तालिन के 'चरित्र के नकारात्मक पहलू या अवगुणों' की संज्ञा दी गयी है, वे कम्युनिस्ट नैतिकता की सही समझ के आधार पर संदेहातीत रूप से अवगुण प्रमाणित होने अभी बाकी हैं।** हमारी धारणा है कि यह प्रमाणित नहीं हुआ है, क्योंकि अभी तक विभिन्न सूत्रों से जितनी रिपोर्ट हम संग्रह कर पाये हैं, उससे हमारा विचार यह है कि 'स्तालिन द्वारा की गयी ज्यादतियों के मामले' जिस तरह पेश किये गये हैं, इन रहस्योद्घाटनों के प्रति (हालांकि ये कोई रहस्योद्घाटन नहीं हैं, क्योंकि 18वीं पार्टी कांग्रेस में स्तालिन ने खुद ही इन मामलों का जिक्र किया था) इस पार्टी कांग्रेस ने जिस तरह की प्रतिक्रिया दिखायी है और इससे उनका जिस तरह का मानसिक गठन प्रदर्शित हुआ है–ये सब इस बात के पर्याप्त संकेत हैं कि 22वीं पार्टी कांग्रेस में बहुत ही कम प्रतिनिधि कम्युनिस्ट नीति-नैतिकता से लैस थे। उनमें से अधिकांश प्रतिनिधि मानवतावादी नैतिक मूल्यबोधों से संचालित थे। यह बात सुनने में भले ही कुछ अजीब लगे, लेकिन फिर भी यह एक तथ्य है, सच्चाई है। **कॉमरेड्स, कम्युनिस्ट मूल्यबोध, अन्तर्वस्तु एवं स्वरूप–दोनों ही में मानवतावादी मूल्यबोधों से भिन्न होते हैं। मानव समाज के इतिहास में मानवतावाद ही अन्तिम बात नहीं है। निस्संदेह यह मानवतावाद ही उनमें सर्वाधिक जीवन शक्ति से भरपूर सुर था, जिसको यह शोषणमूलक बुर्जुआ चिंतनधारा पैदा करने में सक्षम थी। लेकिन समाज की प्रगति का कूच वहीं आकर थम तो नहीं जाता और इसलिए नैतिक मूल्यबोध मानवतावाद में अपनी पराकाष्ठा प्राप्त नहीं कर लेते। मानवतावाद जहां समाप्त होता है, वहां से ही तो साम्यवाद की शुरुआत होती है।**

**मानवतावादी नैतिक मूल्यबोधों के भस्मावशेषों पर ही कम्युनिस्ट नैतिक मूल्यबोध पैदा हो सकते हैं और पनप सकते हैं। मात्र कम्युनिस्ट नीति-नैतिकता की सही समझ के आधार पर ही स्तालिन के चरित्र के कई गुणों का सही मूल्यांकन किया जा सकता है, जो मानवतावादी मूल्यबोधों के मानदण्ड से विचार करने से चरित्र के नकारात्मक गुण यानी अवगुण प्रतीत होंगे।** हो सकता है कि स्तालिन ने अपने जीवनकाल में कई गलतियां की हों, लेकिन इन गलतियों से ही यह स्वयमेव साबित नहीं हो जाता कि स्तालिन के चरित्र के नकारात्मक गुण हावी हो गये थे। इसलिए हम इस मामले को अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी मंच के सामने पेश करने के पक्ष में हैं ताकि इस मामले से संबंधित सभी सवालों का निर्णय किया जा सके। हालांकि फिलहाल के लिए यह मान भी लिया जाये कि स्तालिन ने अपने जीवन के अंतिम दौर में अपने हाथों में बड़ी भारी सत्ता केन्द्रीभूत कर ली थी और कई मामलों में उसका दुरुपयोग भी किया था, जिसके फलस्वरूप कई निरपराध लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी, फिर भी तो यह बात (विश्व साम्यवादी आन्दोलन के नेता के रूप में उनकी महान भूमिका की बात अगर छोड़ भी दें) सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता होने के तौर पर भी उनके कार्यकलापों के केवल एक छोटे से हिस्से को ही छूती है।

## स्तालिन—एक महान कम्युनिस्ट नेता

इस बात से कौन इनकार कर सकेगा कि लेनिन ने जिस तरह संशोनवादियों और मध्यमार्गियों के खिलाफ अपने संघर्ष में राज्य और सर्वहारा के अधिनायकत्व के मार्क्सवादी सिद्धांत को विकृत और धुंधला किये जाने से बचाया था और साम्राज्यवाद व सर्वहारा क्रांति के युग में ऐतिहासिक अनुभवों के विशेष सत्यों को आम सत्यों के रूप में पेश करके मार्क्सवाद के ज्ञान भण्डार में अमूल्य योगदान किया था, उसी तरह स्तालिन ने भी ट्रॉट्स्कीवादियों और बुखारिनपंथियों के खिलाफ अपने संघर्ष सें मार्क्सवाद-लेनिनवाद को विकृत और धुंधला किये जाने से बचाया था और पूंजीवाद के आम

संकट और विश्व पूंजीवादी बाजार के और भी विघटन के युग में ऐतिहासिक अनुभवों के विशेष सत्यों को आम सत्यों के रूप में पेश करके मार्क्सवाद-लेनिनवाद को और भी समृद्ध किया था। लेनिनवाद की समस्याओं के प्रसंग में, राष्ट्रीय समस्या के सवाल पर, भाषाविज्ञान की समस्याओं पर, सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याओं पर और क्रांतिकारी समर विज्ञान के बारे में स्तालिन की रचनाएं और उनके योगदान क्रांतिकारी विज्ञान के अमूल्य ज्ञान भण्डार हैं। एक महान कम्युनिस्ट नेता के रूप में स्तालिन की नेतृत्वकारी भूमिका को गौण करना उनकी खूबियों की कद्र न करना है, जो कि सीपीएसयू के वर्तमान नेतागण स्तालिन की रचनाओं को छापने से इनकार करके वस्तुतः कर रहे हैं। दरअसल **लेनिनवाद की जो वर्तमान समझ है, वह स्तालिन की वजह से ही है, जो सामाजिक जनवाद और ट्रॉट्स्कीवाद की समझ से भिन्न समझ है।** ट्रॉट्स्की लेनिनवादी होने का दावा करते थे, हालांकि लेनिनवाद की समझ के मामले में स्तालिन के साथ उनके बुनियादी मतभेद थे। ट्रॉट्स्की के अनुयायी अपने को लेनिनवादी कहते हैं। वे लेनिन को ऑथोरिटी के रूप में मानते हैं, उनका जो मतभेद है वह लेनिनवाद की स्तालिन की व्याख्या से है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की जो व्याख्या स्तालिन ने की है, उसे मानने से इनकार करने के कारण सामाजिक जनवादियों और ट्रॉट्स्कीवादियों को कम्युनिस्ट नहीं माना जाता। **आज मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बारे में स्तालिन की समझ ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सही समझ है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बारे में स्तालिन की यही समझ साम्यवादी आन्दोलन को वर्तमान ऊंचाई के स्तर तक लायी है।** आगामी दिनों की नयी-नयी समस्याओं और घटनाक्रमों की रोशनी में यह समझ निश्चय ही और भी उन्नत होगी; लेकिन फिर भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की स्तालिन द्वारा प्रतिष्ठित बुनियादी समझ कायम रहेगी और भविष्य में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की समझ को और भी उन्नत व विकसित करने में कम्युनिस्टों को रास्ता दिखायेगी। वस्तुतः मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन सरीखे पूर्ववर्तियों की तरह ही स्तालिन भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बारे में एक ऑथोरिटी हैं। इसलिए

स्तालिन को मिटा देने का अर्थ है उस ऑथोरिटी को ही नकार देना और इसलिए लेनिनवाद की उनकी व्याख्या को ही ठुकरा देना, जो कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की आज के दिनों की समझ है। ऐसा करने से ट्रॉट्स्कीवादियों और बुखारिनपंथियों के खिलाफ निरन्तर संघर्ष चलाकर मार्क्सवाद की क्रांतिकारी प्राणसत्ता की स्तालिन ने जिस तरह रक्षा की थी, उनके इस अनुपम संघर्ष का इतिहास भावी पीढ़ियों के लिए अंधकारमय और अज्ञात ही रह जायेगा और वे पीढ़ियां मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बारे में वैचारिक तौर पर फौलादी समझ से लैस होने के अवसर से वंचित रह जायेंगी। इसका मतलब हो जायेगी हर तरह के प्रतिक्रांतिकारी विचारों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के नाम पर चलने का न्योता दे देना और साम्यवादी आन्दोलन की सैद्धांतिक बुनियाद को धक्का पहुंचा देना। **संक्षेप में, यह वस्तुगत रूप से स्वयं लेनिन को ही बेताज कर देगा।**

## स्तालिन–शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत के रूपकार

सिर्फ असाधारण क्षमता वाले सिद्धांतकार ही नहीं, बल्कि साम्यवादी आन्दोलन के एक व्यावहारिक संगठक के नाते भी मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के साथ ही स्तालिन को भी श्रद्धा और सम्मान के साथ याद किया जाना चाहिए। विश्व के प्रथम समाजवादी राष्ट्र की स्थापना अगर लेनिन ने की थी, तो ये स्तालिन ही थे जिन्होंने इसे शांति और समाजवाद के दुर्भेद्य दुर्ग के रूप में सुदृढ़ किया था। अगर लेनिन ने तीसरे 'इन्टरनेशनल' को कायम किया था, तो यह स्तालिन का ही नेतृत्व था, जिसे उस नवजात संगठन को विशाल रूप देने के लिए श्रेय जाता था। इसके अलावा भी, देश-देश में जन गणतांत्रिक राज्य कायम करने के संघर्ष का मार्गदर्शन करने वाला स्तालिन का नेतृत्व ही था। औपनिवेशिक, अर्द्ध औपनिवेशिक और पूंजीवादी देशों में साम्यवादी आन्दोलन को गंभीर कमियों-खामियों और सीमाबद्धताओं के बावजूद जो अभूतपूर्व प्रगति, विकास और सफलता हासिल हुई है, उसका श्रेय भी स्तालिन के नेतृत्व को ही जाता है। निस्संदेह ये लेनिन ही थे, जिन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था और समाजवादी व्यवस्था के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत के

बीज बोये थे, **लेकिन ये स्तालिन ही थे, जिन्होंने सिद्धांत के रूप में इस बीज को एक पूरा ढांचा प्रदान किया था और उन्होंने ही इसे वह धुरी बना दिया था, जिस पर सोवियत विदेश नीति आज तक भी घूमती है।** दो सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की धारणा को एक सिद्धांत के रूप में कायम करने और सोवियत विदेश नीति में इसे व्यवहार में लागू करने के लिए ट्रॉट्स्की गुट के अनुगामियों ने लेनिन को नहीं, बल्कि स्तालिन को ही प्रतिक्रांतिकारी और वर्ग-समझौतावादी कहकर दोषी ठहराया था। लेकिन आश्चर्य की बात है कि सिद्धांत और प्रयोग में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति के असली संस्थापक के नाते स्तालिन की भूमिका को न केवल आज अस्वीकार किया जा रहा है, बल्कि अति सूक्ष्म रूप में एक ऐसा प्रचार अभियान भी चलाया जा रहा है, जिससे कि यह धारणा निर्मित हो कि मानो ख्रुश्चेव ही दो व्यवस्थाओं के बीच इस शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत के रूपकार हों और स्तालिन के सारे के सारे अनुगामी इस शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत और व्यवहार के विरोधी हों, वे केवल युद्ध का रास्ता अपनाने पर ही अड़े रहना चाहते हों और इनके खिलाफ ही मानो ख्रुश्चेव लड़ाई लड़ रहे हों। वर्तमान विश्व परिस्थिति का जो विश्लेषण स्तालिन ने पेश किया था, दो विश्व व्यवस्थाओं के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत की जो विस्तृत व्याख्या उन्होंने की थी और इस सिद्धांत के आधार पर जो सोवियत विदेश नीति उन्होंने निरूपित की थी तथा इसी तरह की और भी कई देनें जो वे दे गये थे, उन्हीं को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का वर्तमान नेतृत्व हूबहू पेश कर रहा है, उन्हीं का अनुसरण कर रहा है और उन्हीं को दोहरा रहा है, लेकिन स्तालिन की देन के रूप में उन्हें नहीं मान रहा है। हमें लगता है कि यह रवैया कम्युनिस्ट नीति-नैतिकता से मेल नहीं खाता है। नेता की बात तो दूर रही, यहां तक कि कुछ मामलों में तो सहकर्मी की भी श्रेष्ठता को मान्यता देने से कोई खुद छोटा नहीं हो जाता, बल्कि दूसरों के श्रेष्ठ गुणों की कद्र करना अपने को कम्युनिस्ट के तौर पर और भी बड़ा बनाने में आदमी की मदद करता है। जो गुब्बारे की तरह फूले

हुए अहंबोध से ग्रस्त हैं, वे अहंकारी और घमण्डी हो जाते हैं तथा व्यक्ति-पूजावाद के शिकार हो जाते हैं। इसी तरह जो जानबूझकर दूसरों के द्वारा अदा की गयी ऐतिहासिक भूमिका को गौण करके देखते हैं, वे भी विपरीत दिशा से व्यक्ति-पूजा पर ही अमल करते हैं। पार्टी और साम्यवादी आन्दोलन में स्तालिन की महानता को यथोचित मूल्य न देकर भी कार्यतः व्यक्ति-पूजावाद पर अमल हो रहा है। क्या सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के वर्तमान नेताओं से हम स्तालिन के बारे में कुछ सवाल पूछ सकते हैं? क्या स्तालिन महज सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य सब नेताओं में से ही एक नेता थे या उनका स्थान उनके सहकर्मियों से काफी ऊंचा था? साम्यवादी आन्दोलन में जो भूमिका उन्होंने अदा की थी, वह क्या अन्य समकालीन नेताओं की भूमिका के समतुल्य थी या उन्होंने उन दिनों के साम्यवादी आन्दोलन में सभी नेताओं के नेता के नाते एक विशिष्ट भूमिका निभाई थी? निस्संदेह उनकी सीमाबद्धताएं थीं। इन सीमाबद्धताओं को दिखाना और इस मामले में कम्युनिस्टों को सचेत कर देना एक बात है, लेकिन उन्हें एक साधारण स्तर के कम्युनिस्ट के रूप में चित्रित करना एक बिल्कुल भिन्न बात है। वे एक साधारण स्तर के कम्युनिस्ट थे, यह बात सच भी नहीं है और उन्हें ऐसे चित्रित करने का कोई क्रांतिकारी तात्पर्य भी नहीं है। तब स्तालिन को एक साधारण स्तर के कम्युनिस्ट के रूप में दिखाना महज पूर्वाग्रह के अलावा और क्या कारण हो सकता है? क्या हम पूछ सकते हैं कि अपनी सीमाबद्धताओं के बावजूद स्तालिन के अलावा सीपीएसयू के जीवित या मृत नेताओं में और कौन हैं, जो लेनिन के सबसे करीब हैं? कम्युनिस्टों के कार्यकलाप सदा क्रांतिकारी प्रयोजन से प्रेरित होने चाहिएं। स्तालिन को ब्लैकआउट करके कौन-सा स्वार्थ पूरा किया जा रहा है? असली कम्युनिस्ट जो चाहते हैं, वह यह है कि व्यक्ति-पूजावाद के मूल कारण को दूर किया जाये, कम्युनिज्म-विरोधी इस चलन के बचे-खुचे अवशेषों का भी उन्मूलन कर दिया जाये, ऐसे कारगर कदम उठाये जायें कि भविष्य में भी यह चीज साम्यवादी आन्दोलन को दूषित न कर सके और उचित शिक्षा-दीक्षा के जरिये साधारण स्तर के

कम्युनिस्ट भी उनकी सीमाबद्धताओं से मुक्त होकर स्तालिन जैसे अच्छे कम्युनिस्ट बन सकें। ये काम करने के लिए क्या स्तालिन को ब्लैकआउट करना जरूरी है या यह अत्यावश्यक है कि और भी साम्यवादी ज्यादा से ज्यादा स्तालिन के चरित्र के सकारात्मक गुणों का अनुशीलन करें।

## स्तालिन का सही मूल्यांकन करने का समय आ गया है

साम्यवादी आन्दोलन में स्तालिन की सेवाओं को पूरी तरह से ब्लैकआउट कर देने के समर्थन में कोई–कोई यह तर्क दे रहा है कि अतीत में उनकी सेवाओं का उल्लेख इतना ज्यादा किया जा चुका है और उन्हें इतनी व्यापक तौर पर मान्यता दी जा चुकी है कि वर्तमान में इनका उल्लेख करना जरूरी नहीं है। ये बातें हम कॉमरेड मिकोयान* की बात को ध्यान में रखकर कर रहे हैं। कुछ वर्ष पहले जब वे भारत आये थे, तब तत्कालीन समाचार पत्रों में यह छपा था कि उन्होंने इस तरह के कुछ तर्क दिये थे। ये तर्क कदापि मान्य नहीं हैं, क्योंकि ये आलोच्य विषय का स्पर्श मात्र भी नहीं करते हैं। बात यह नहीं है कि अतीत में स्तालिन की सेवाओं का उल्लेख जिस तरह बार–बार किया जाता था अब भी उसी तरह बार–बार किया जाये या नहीं, बल्कि बात यह है कि स्तालिन का यथोचित मूल्यांकन किया जाये। स्तालिन और उनकी सेवाओं का बार–बार उल्लेख किये जाने के बावजूद उनका सही मूल्यांकन नहीं किया गया है और उस समय आम तौर पर व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन–पूजा के प्रभाव का परिवेश जिस तरह सर्वत्र छाया हुआ था, उस परिवेश में उनका सही मूल्यांकन करना संभव भी नहीं था। उन दिनों उनका जो मूल्यांकन किया भी गया था, वह स्तालिन के प्रति अंधभक्ति से धुंधलाया हुआ था। वर्तमान परिवेश क्योंकि इस अंधता से मुक्त हो चुका है, इसलिए आज साम्यवादी आन्दोलन में स्तालिन की सेवाओं का सही मूल्यांकन करना संभव है। इसलिए अब यह काम करना चाहिए। इस संदर्भ में इसके अलावा एक और बिन्दु गौरतलब है, वह यह है कि स्तालिन को

* जो बाद में वर्गद्रोही हो गये।

ब्लैकआउट करने के कदमों में एक अत्यंत बुरी प्रवृत्ति प्रकट हुई है। वह प्रवृत्ति है–एक नेता व शिक्षक को तब तक ही मानकर चलना, जब तक कि उनकी कोई त्रुटि नजर न आये। लेकिन ज्यों ही उनकी कोई त्रुटि प्रकाश में आये तो साथ ही साथ नेता के रूप में उनको मानने से इनकार कर देना। इस प्रवृत्ति में जो अत्यंत खतरनाक धारणा अन्तर्निहित है, वह यह कि नेता में कोई कमी-त्रुटि नहीं हो सकती। यह एक अत्यंत खतरनाक धारणा है, जो नेता के प्रति अंधभक्ति को जन्म देती है और व्यक्तिपूजा के चलन का पथ प्रशस्त करती है।

## व्यक्तिगत तौर पर स्तालिन जिम्मेदार या प्रशासनिक अफसरशाही

अब 'स्तालिन द्वारा सत्ता के दुरुपयोग' के उदाहरणों के तौर पर ख्रुश्चेव द्वारा उद्धृत किये गये मामलों को देखा जाये। गलती और अपराध में क्या फर्क होता है-यह तो हम सभी जानते ही हैं। कोई पक्का सबूत न हो, तो यह किसी भी तरह दृढ़तापूर्वक नहीं कहा जा सकता कि 'स्तालिन द्वारा सत्ता का दुरुपयोग' जो कई निरपराध लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार था, अपराधमूलक उद्देश्य से प्रेरित था। 22वीं पार्टी कांग्रेस ने ऐसे कोई तथ्य पेश नहीं किये हैं। इस परिस्थिति में ख्रुश्चेव की तरह यह निष्कर्ष निकालना किसी तरह भी संभव नहीं है कि 'यह महज गलती नहीं थी; यह थी सुनियोजित, अपराधमूलक दुस्साहसिक नीति'। ख्रुश्चेव ने जिन सब मामलों को उद्धृत किया है और उनसे उन्होंने जो बात सिद्ध करनी चाही है, उसकी बजाय इनकी अन्य संभावित व्याख्या भी हो सकती है। सभी जानते हैं कि स्तालिन के समय प्रशासन तंत्र में अफसरशाही गहरी जड़ें जमाये बैठी थी। अफसरशाही को वे चाहे जितना भी नापसंद करते रहे हों (उनकी इस नापसंदगी के सबूत 17वीं पार्टी कांग्रेस में उनकी रिपोर्ट में अफसरशाही की निन्दा में भी पाये जाते हैं) अफसरशाही से वे घिर गये थे, रोजमर्रे के प्रशासनिक कामकाज को चलाने में इस अफसरशाही पर ही उनको निर्भर रहना पड़ता था। यह भी हो सकता है कि कई निरपराध लोगों की जीवन-हानि

के लिए यह अफसरशाही ही जिम्मेदार रही हो। प्रशासन के मुखिया के नाते स्तालिन ने शायद इस पर औपचारिक तौर से अपने अनुमोदन की मोहर लगा दी हो। ख्रुश्चेव ने 22वीं पार्टी कांग्रेस में अपने समापन भाषण में जो सब तथ्य बताये हैं, सबूत के आधार पर उनसे ही स्थिति की इस व्याख्या की पुष्टि हो जाती है। ख्रुश्चेव द्वारा उद्धृत किये गये याकिर, स्वानिद्जे और अन्यों का मामला ही ले लीजिए। ख्रुश्चेव के कथनानुसार भी वे पार्टी के प्रति, स्तालिन के प्रति बड़े वफादार थे। इनमें से एक तो स्तालिन का करीबी रिश्तेदार था और सभी स्तालिन के अत्यंत घनिष्ठ कॉमरेड थे। स्तालिन के प्रति उनकी वफादारी इतनी गहरी थी कि जब वे गोली से उड़ाये गये, तब भी याकिर ने ''पार्टी जिन्दाबाद, स्तालिन जिन्दाबाद'' के नारे लगाये थे। उनकी इस वफादारी की बात से स्तालिन स्वयं भी वाकिफ थे। किसी व्यक्तिगत कारण से स्तालिन अगर प्रेरित होते, तो उन्होंने अपने वफादार कॉमरेडों को गोली से मारने के आदेश निश्चय ही नहीं दिये होते, बड़ी आसानी से उन्होंने उनकी जान बचा ली होती। लेकिन उन्होंने न केवल उनको सजा देने के आदेश का अनुमोदन कर दिया था, बल्कि उनकी मौत की खबर उन्हें बताये जाने पर भी उन्होंने खेद महसूस नहीं किया था। ख्रुश्चेव ने स्तालिन की क्रूरता साबित करने के लिए इस तथ्य को एक अतिरिक्त हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया। अपने वफादार और घनिष्ठ कॉमरेडों को मृत्युदंड देने की इजाजत देना और उनकी मृत्यु पर खेद महसूस न करना स्तालिन के बाहरी तौर पर घोर आश्चर्यजनक लगने वाले इस आचरण को कैसे समझें? प्रशासनतंत्र की रिपोर्ट के आधार पर स्तालिन पूरी तरह संतुष्ट थे कि वे देशद्रोह के अपराधी थे और इस मामले में उन्होंने एक असली क्रांतिकारी की तरह अपना फर्ज निभाया था। ऐसे कामों में प्रतिफलित हुए चरित्र का यथार्थ मूल्य समझ पाने में मानवतावादी विफल होंगे। **एक क्रांतिकारी के लिए क्रांतिकारी प्रयोजन ही सबसे बड़ा होता है; बाकी सभी कुछ–जैसे प्यार-मोहब्बत, स्नेह-ममता, व्यक्तिगत रिश्ते-नाते, दोस्ती आदि जो एक मानवतावादी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण व मूल्यवान होते हैं और उनके जीवन**

**को जीने लायक बनाते हैं, एक क्रांतिकारी के लिए ये सब क्रांतिकारी प्रयोजन के मातहत होते हैं। क्रांति की जरूरत से अगर घनिष्ठतम कॉमरेड को प्राणदंड भी देना पड़े, तो एक क्रांतिकारी परम संतोष के साथ दे सकता है।** क्रांतिकारी जरूरत हेतु ही स्तालिन ने याकिर, स्वानिद्जे और अन्य घनिष्ठ सहयोद्धा कॉमरेडों के प्राणदण्ड को मंजूरी दी थी–यही शायद सच हो जो बात ख्रुश्चेव के ध्यान में ही नहीं आयी। यह भी हो सकता है कि प्रशासनिक अफसरशाही की ओर से उन लोगों के बारे में प्राप्त गलत सूचना से उनका फैसला प्रभावित हो गया हो। अगर मामला ऐसा रहा हो, तो यह गलती बनती है अपराध नहीं। हमें तो एकमात्र यही संभावित व्याख्या सही लगती है, वरना स्तालिन अपने प्रति वफादार व विश्वस्त कॉमरेडों को मृत्युदण्ड देने का आदेश क्यों देते और संतोष क्यों महसूस करते–इसकी और कोई व्याख्या नहीं दी जा सकती।

## टाइम फैक्टर को मद्देनजर रखना होगा

हमने पहले ही दिखाया है कि सोवियत संघ के अन्दर और बाहर मौजूद कठिन वस्तुगत परिस्थितियों का बहाना बनाकर क्यों कमी-खामियों और सीमाबद्धताओं के बने रहने को जायज नहीं ठहराया जा सकता है। लेकिन टाइम फैक्टर (काल-कारक) को भी पूरी तरह नजरअंदाज कर देना सही नहीं होगा। खुफिया विभाग का यह दिखाने वाला एक दस्तावेज था कि लाल फौज में जर्मन सेनापतियों के कुछ एजेन्ट हैं–अब जाली साबित हो चुका यह दस्तावेज उस समय जाली नहीं समझा गया था। सोवियत संघ पर फासिस्ट और साम्राज्यवादी हमला करने की योजना बना रहे थे। देश में प्रतिक्रांतिकारी अपना सिर उठाने की कोशिश कर रहे थे। कैरियरिस्ट यानी उच्च महत्वाकांक्षी लोगों, यहां तक कि कुछ विक्षुब्ध तत्वों ने भी पार्टी में घुसपैठ कर ली थी, उनमें से कुछ तो पार्टी में काफी ऊंचे ओहदे पर काबिज हो जाने में भी सफल हो गये थे। ऐसे एक कठिन संकट-काल में दुश्मनों को उखाड़ बाहर करने के लिए सख्त और शीघ्र कदम उठाने पड़े थे। ऐसी परिस्थिति में

विशाल संख्या में दोषी व्यक्तियों के साथ-साथ अच्छी-खासी संख्या में निरपराध लोगों को भी जान गंवानी पड़ी थी। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के नेताओं को, खासकर स्तालिन को इस मामले में और भी ज्यादा सतर्कता बरतनी चाहिए थी। अब यह बात जग जाहिर हो चुकी है कि उन दिनों जरूरी सतर्कता की काफी कमी रही। सतर्कता की इस कमी का जैसे किसी तरह भी समर्थन नहीं किया जा सकता, वैसे ही फिर इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि संकट-काल में ऐसी घटनाएं घट जाना कोई असंभव बात नहीं है। बहरहाल, कोई घटना चाहे कितनी ही दु:खदायक क्यों न हो, काल-कारक (टाइम फैक्टर) पर विचार किये बिना उस घटना का कोई मनगढ़ंत मूल्यांकन करना भी वांछित नहीं है, क्योंकि यह हमें गलत निष्कर्ष की ओर ले जा सकता है। जैसे मान लीजिए, 20 वर्ष बीत जाने के बाद समाजवाद की और भी तरक्की और मजबूती के बाद सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य कोई नेता आकर अगर कहें कि हंगरी के प्रतिक्रांतिकारी अभ्युत्थान का दमन करते समय असंख्य निरपराध लोगों की हत्याएं करने के लिए ख्रुश्चेव व्यक्तिगत तौर पर दोषी हैं—तो इन सब क्रूर कृत्यों के लिए उनके द्वारा व्यक्तिगत तौर पर ख्रुश्चेव को दोषी ठहराना क्या ठीक होगा? निश्चित रूप से हम कहेंगे—नहीं, यह ठीक नहीं होगा। क्रांति ही जब दांव पर लगी हो, तो ऐसे संकट-काल में प्रतिक्रांतिकारियों को पूरी तरह नेस्तानाबूद कर देने के लिए बल प्रयोग करना ही पड़ता है, जिनके साथ अनेक निरपराध लोग भी मारे जा सकते हैं। यह भी तो हो सकता है कि उनको सजा देने की कार्रवाई (जो बाद में साबित हो गया था कि वे निरपराध लोग थे) सोवियत संघ में समाजवाद को बचाने, सुदृढ़ करने और मजबूत करने के स्तालिन के गहरे सरोकार से प्रेरित थी। इस मामले में गलत फैसले के लिए उनको किसी तरह भी अपराधी की संज्ञा नहीं दी जा सकती—यह सद्इच्छा से हुई भूल है।

## स्तालिन के सहयोद्धाओं की भूमिका

सबसे अन्त में हम एक और बिन्दु का उल्लेख करना चाहते

हैं। गलती मानने से कम्युनिस्ट डरते नहीं हैं। लेकिन आलोचना–आत्म आलोचना की लेनिनीय नीति का क्या ठीक तरह से अनुसरण किया जा रहा है? अगर स्तालिन ने स्वेच्छाचारी की तरह काम किया, पार्टी के अंदरूनी जनवाद को भंग किया, व्यक्ति–पूजावाद को चलाते रहे और सत्ता का दुरुपयोग किया तो इस विषय को पार्टी की नजरों में लाने और उन्हें जकड़बंदी में रखने के लिए उनके सहयोद्धा कॉमरेड उस समय क्या कर रहे थे? क्या ख्रुश्चेव, मिकोयान या स्तालिन के अन्य सहयोद्धाओं ने उस समय अपनी भूमिका सही ढंग से और साहस के साथ निभायी थी? सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के वर्तमान नेताओं में से कोई भी स्तालिन के समय में इतने कमजोर एक साधारण स्तर के सदस्य तो नहीं थे कि अपनी आवाज पार्टी को न सुना पाते। उनमें से अधिकांश ही तो उस समय पार्टी केन्द्रीय कमेटी के सदस्य थे। अगर वे चाहते और तहेदिल से कोशिश करते, तो स्तालिन को सुधार सकते थे। अगर वे उनका विरोध करने की हिम्मत नहीं कर सकते थे (कायरता चरित्र का एक ऐसा दुर्गुण है, जो एक क्रांतिकारी के लिए सोचा भी नहीं जा सकता) तो भी तो स्तालिन के अहंकार को बढ़ावा देने से तो कम से कम बाज आ सकते थे। लेकिन उल्टे उन्होंने भी उन दिनों स्तालिन को देवता तुल्य बनाने के सुर में ही सुर मिलाया था। स्तालिन जैसे एक परीक्षित क्रांतिकारी का भी सिर घुमा देने के लिए उनका यह आचरण कोई कम जिम्मेदार नहीं है। स्तालिन के हाथों में जबरदस्त सत्ता केन्द्रीभूत हो जाने ने ही सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के वर्तमान नेताओं को उन दिनों अपना फर्ज ठीक तरह और साहस के साथ निभाने से रोक दिया था–यह तर्क भी मानने लायक नहीं है, क्योंकि आखिरकार यह पार्टी ही तो थी, जिसने स्तालिन को अधिकार सौंपे थे। इसलिए अगर पार्टी ऐसा फैसला कर लेती कि उनको समस्त अधिकारों से वंचित करना है, तो वह ऐसा कर सकती थी। तब इस परिस्थिति को पार्टी की नजरों में लाने की कोई कोशिश क्यों नहीं की गयी? बुर्जुआ अखबारों में इस विषय में एक रिपोर्ट छपी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ख्रुश्चेव जब 'स्तालिन के सत्ता के दुरुपयोग' के मामलों का वर्णन

कर रहे थे, तब पार्टी कांग्रेस का एक प्रतिनिधि सवाल करता सुना गया। अदृष्टिगोचर प्रतिनिधि ने पूछा था, ''तब आप लोग क्या कर रहे थे?'' ख्रुश्चेव पहचान नहीं पाये कि किसकी आवाज थी। जिस कॉमरेड ने सवाल किया था, उसका उन्होंने नाम जानना चाहा। वह प्रतिनिधि उठ खड़ा होकर ख्रुश्चेव को अपना नाम बताने का साहस नहीं कर पाया। 'खामख्वाह जोखिम उठाने का कोई मतलब नहीं, गूंगे का कोई दुश्मन नहीं' की कहावत का पालन करते हुए उसने अदृष्टिगोचर रहने का ही निर्णय लिया। कुछेक मिनट के काफी नाटकीय विराम और चुप्पी के बाद ख्रुश्चेव ने जवाब दिया–''जिस कॉमरेड ने सवाल उठाया था, वे अब जो कुछ कर रहे हैं, हमने भी वही किया था।'' अखबारों की रिपोर्ट इसी तरह की थी। यह घटना अगर सच है, तो कहना होगा कि यह घटना पार्टी कांग्रेस के प्रतिनिधियों की चेतना के स्तर का ही एक दु:खद वृतांत कह रही है। इसके अलावा, ख्रुश्चेव का सरस हाजिर जवाब चाहे कितना ही मुखरोचक क्यों न हो, पर उन्होंने उस कॉमरेड के सवाल का कोई जवाब नहीं दिया है। हमारा मानना है कि 'स्तालिन के द्वारा सत्ता के दुरुपयोग' संबंधी सभी सवालों को उपलब्ध तथ्यों के अधार पर पुनर्विचार करके देखने और इस मामले में सिर्फ स्तालिन की भूमिका को ही नहीं, बल्कि उनके अन्य सहकर्मियों की भूमिका को भी बारीकी से जांच-पड़ताल करके देखने का सही समय आ गया है।

## साम्यवादी आन्दोलन को नयी-नयी विजयों की ओर ले चलें

इस खुली चिट्ठी का समापन करने से पहले विश्व साम्यवादी आन्दोलन के नेताओं से और खास तौर पर कॉमरेड ख्रुश्चेव से हम फिर अपील करते हैं कि वे सोवियत संघ के नेतृत्वाधीन विश्व समाजवादी खेमे से सम्बद्ध एक बिरादराना पार्टी की आलोचना के हिस्से के रूप में ही हमारे इस विचार-विश्लेषण की विवेचना करें। स्तालिन के सापेक्ष मूल्यांकन के सवाल पर वैचारिक क्षेत्र में साम्यवादी आन्दोलन आज जिस पैमाने की भ्रांति के रूबरू है, उस पर हम गहरी चिंता महसूस किये बिना नहीं रह सकते। इस भ्रांति

को दूर करने के लिए और विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता को और भी मजबूत करने के हित में स्तालिन का सही-सही मूल्यांकन करना जरूरी है। व्यक्तिपूजा के मूल कारण से साम्यवादी आन्दोलन को मुक्त करना, स्तालिन-पूजा के जितने भी अवशेष रह गये हैं, उनका खात्मा करना, आपसी संबंधों की द्वन्द्वात्मक समझ के आधार पर विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता को और भी सुदृढ़ करना, साम्यवादी शिक्षा से कम्युनिस्टों को लैस करना और इसके जरिये साम्यवादी आन्दोलन को और भी सुदृढ़ और मजबूत करना—आज सबसे महत्वपूर्ण काम हैं। वर्तमान विश्व परिस्थिति विश्व सर्वहारा क्रांति की रफ्तार को तेज करने के अभूतपूर्व सुअवसर प्रदान करती है। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन के नेतृत्व पर हमें पूरा भरोसा है और हम आशा करते हैं कि परिस्थिति के अनुसार वह अपनी जिम्मेदारी निभाने में आगे आयेगा, वैचारिक संघर्ष को सफलतापूर्वक जारी रखेगा, वैचारिक भ्रांति को दूर करेगा और साम्यवादी आन्दोलन को नयी-नयी विजयों की ओर ले जायेगा।

आपका साथी,
शिवदास घोष
महासचिव
केन्द्रीय कमेटी
सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया

16-18 नवम्बर, 1961 को केन्द्रीय कमेटी की ओर से गृहीत दस्तावेज। इसे 1 मार्च, 1962 को पुस्तिका के रूप में अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया गया।